

[2025] 4 एस.सी.आर 765 : 2025 आई.एन.एस.सी 483

क्रायोगैस इक्विपमेंट प्राइवेट लिमिटेड

बनाम

आईनॉक्स इंडिया लिमिटेड और अन्य

(सिविल अपील संख्या 5174/2025)

15 अप्रैल 2025

[सूर्यकांत* और नॉगमीकापम कोटिस्वर सिंह, न्यायाधीश]

विचार के लिए मुद्दा

- i) यह निर्धारित करने के लिए क्या मापदंड हैं कि कोई कार्य या लेख एस में निर्धारित सीमा के भीतर आता है या नहीं। 15(2) प्रतिलिपि अधिकार अधिनियम, जिससे इसे 'डिजाइन' यू/एस के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। डिजाइन अधिनियम के 2 (डी);
- (ii) क्या उच्च न्यायालय ने वाणिज्यिक न्यायालय के आदेश को रद्द करने में गलती की है और इस प्रकार सी. पी. सी. के यू/याVII, आर. 11 के तहत आवेदन को खारिज कर दिया है।

मुख्यबिंदु[†]

प्रतिलिपि अधिकार अधिनियम, 1957 -एस. 15(2)- डिजाइन अधिनियम, 2000 -एस. 2(डी)- यह निर्धारित करने के लिए कौन से मापदंड हैं कि कोई कार्य या लेख एस में निर्धारित सीमा के भीतर आता है या नहीं।

आयोजित: मूल कलात्मक कार्य, जिसे शुरू में कॉपीराइट संरक्षण प्राप्त है, केवल इसलिए नहीं खोता है क्योंकि इससे प्राप्त 'डिजाइन' को उत्पाद बनाने के लिए औद्योगिक रूप से लागू किया गया है- जबकि 'कलात्मक कार्य' अभिव्यक्ति का एक व्यापक वर्णक्रम है, 'डिजाइन' विशिष्ट विशेषताओं तक ही सीमित है जैसे कि एक औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा से एक वस्तु पर लागू किए गए आकार, विन्यास, पैटर्न, अलंकरण या रेखाओं या रंगों की संरचना के रूप में, जिसके परिणामस्वरूप एक तैयार उत्पाद होता है जो आंखों को आकर्षित करता है-ये दृष्टि से आकर्षक विशेषताएं, जब औद्योगिक रूप से लागू की जाती हैं, तो डिजाइन अधिआदेश के तहत एक 'डिजाइन' को परिभाषित करती हैं- जांच केवल यह मानते हुए समाप्त नहीं की जा सकती है कि जो कॉपीराइट अधिआदेश के अर्थ के भीतर एक 'कलात्मक कार्य' के रूप में योग्य नहीं है, वह स्वचालित रूप से डिजाइन अधिआदेश के तहत सुरक्षा प्राप्त करेगा- जबकि डिजाइन अधिआदेश के तहत सुरक्षा उतनी स्थायी नहीं है जितनी कि कॉपीराइट अधिआदेश के तहत है, यह डिफॉल्ट रूप से प्रदान नहीं की जाती है और इसके लिए विशिष्ट आवश्यकताओं की आवश्यकता होती है। पूरा किए जाने वाले मानदंड-इस संबंध

* लेखक

में, भारत और विश्व स्तर पर अदालतें लगातार 'कार्यात्मक उपयोगिता' के परीक्षण को लागू करती हैं। यह निर्धारित करना कि क्या कोई कार्य डिजाइन अधिआदेश के तहत संरक्षण के लिए योग्य है- इस न्यायालय ने कॉपीराइट अधिआदेश की धारा 15 (2) के कारण उत्पन्न पहेली को खोलने के लिए दो-आयामी दृष्टिकोण तैयार किया है ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या कोई काम डिजाइन अधिआदेश द्वारा संरक्षित होने के योग्य है- इस परीक्षण में विचार किया जाएगा:

(i) क्या विचाराधीन कार्य विशुद्ध रूप से कॉपीराइट अधिनियम के तहत संरक्षण का हकदार एक 'कलात्मक कार्य' है या क्या यह ऐसे मूल कलात्मक कार्य से व्युत्पन्न एक 'डिजाइन' है और कॉपीराइट अधिनियम की धारा 15 (2) में भाषा पर आधारित एक औद्योगिक प्रक्रिया के अधीन है; (ii) यदि ऐसा कार्य कॉपीराइट संरक्षण के लिए योग्य नहीं है, तो 'कार्यात्मक उपयोगिता' का परीक्षण लागू करना होगा ताकि इसके प्रमुख उद्देश्य को निर्धारित किया जा सके, और फिर यह पता लगाया जा सके कि क्या यह डिजाइन अधिनियम के तहत डिजाइन संरक्षण के लिए योग्य होगा-अदालतों को इस परीक्षण को लागू करते समय, निम्नलिखित द्वारा निर्देशित एक विशिष्ट मामले की जांच करनी चाहिए: वैधानिक प्रावधान, न्यायिक पूर्व निर्णय और तुलनात्मक न्यायशास्त्र। [पैरा 58,59,60,61]

प्रतिलिपि अधिकार अधिनियम, 1957- डिजाइन अधिनियम, 2000- सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908- प्रतिवादी सं. 1 ने अपीलार्थियों के खिलाफ वाणिज्यिक न्यायालय के समक्ष एक ट्रेडमार्क मुकदमा दायर किया- अपीलकर्ता ने अपना आवेदन यू/ओआर के तहत दायर किया। सी. पी. सी. का VII, आर. 11, इस आधार पर वाद को अस्वीकार करने की मांग करता है कि यह यू/एस के तहत बनाए आदेश योग्य नहीं था। कॉपीराइट अधिनियम की धारा 15 (2)-यह तर्क दिया गया था कि प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग, जिसके लिए प्रतिवादी नं. 1 ने कॉपीराइट संरक्षण का दावा किया, जो 'डिजाइन' यू/एस की परिभाषा के अंतर्गत आता है। डिजाइन अधिनियम, 2000 का 2 (घ)-वाणिज्यिक न्यायालय ने उक्त आवेदन को स्वीकार कर लिया और प्रतिवादी नं. 1 की शिकायत-उच्च न्यायालय ने मामले को नए सिरे से विचार के लिए वाणिज्यिक न्यायालय को भेज दिया-वाणिज्यिक न्यायालय ने आवेदन पर पुनर्विचार किया और सी. पी. सी. के यू/या VII, आर. 11 के तहत आवेदन को अनुमति दी और शिकायत को खारिज कर दिया-प्रतिवादी नं. 1 ने वाणिज्यिक न्यायालय के आदेश को चुनौती देते हुए फिर से उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया- उच्च न्यायालय ने वाणिज्यिक न्यायालय के आदेशों को दरकिनार करते हुए विवादित निर्णय द्वारा-क्या उच्च न्यायालय ने वाणिज्यिक न्यायालय के आदेश को दरकिनार करने में गलती की और इस प्रकार सी. पी. सी. के यू/या VII, आर. 11 के तहत आवेदन को खारिज कर दिया:

आयोजित: मूल विवाद इस बात के इर्द-गिर्द घूमता है कि क्या 'प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग्स' यू/एस ड्राइंग के रूप में योग्य हैं। कॉपीराइट अधिनियम के 2 (सी) या क्या वे 'डिजाइन' यू/एस की परिभाषा के भीतर आते हैं। डिजाइन अधिनियम की 2 (डी), विस्तृत जांच की आवश्यकता-यह न्यायालय उच्च न्यायालय के इस तर्क से पूरी तरह सहमत है कि क्या मूल कलात्मक कृति डिजाइन अधिनियम के तहत 'डिजाइन' के अर्थ के भीतर आएगी, इस सवाल का जवाब सी. पी. सी. के यू/या VII, आर. 11 के तहत एक आवेदन पर निर्णय लेते समय नहीं दिया जा सकता है-इस चरण में शिकायत में वाद हेतुक प्रकटीकरण के रूप में केवल प्रथमदृष्टया जांच शामिल होगी-'प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग' की वास्तविक प्रकृति का पता लगाने से संबंधित प्रश्न में कानून और तथ्य का एक मिश्रित प्रश्न शामिल है और इसका निर्णय नहीं किया जा सकता था। वाणिज्यिक न्यायालय द्वारा प्रारंभिक स्तर पर वाद अभिकथनों के इस तरह के आकस्मिक मूल्यांकन के आधार पर-इसलिए यह न्यायालय उच्च न्यायालय से सहमत है कि यह मामला शामिल विचारणीय मुद्दों को देखते हुए एक परीक्षण की गारंटी देता है- वाणिज्यिक न्यायालय के समक्ष अभियोक्ता, अर्थात्, प्रतिवादी सं। 1, वाणिज्यिक न्यायालय द्वारा की गई गलत धारणाओं के कारण गलत तरीके से गैर-उपयुक्त था, जिसने शिकायत को गलत तरीके से पढ़ा, कानूनी सिद्धांतों को गलत तरीके से लागू किया और 'कलात्मक कार्य' और 'डिजाइन' के बीच के अंतर की अनदेखी की- प्रासंगिक पूर्व निर्णय और कानूनी स्थितियों पर चर्चा और स्पष्ट परीक्षण के आलोक में, वाणिज्यिक न्यायालय को इस मुद्दे पर नए सिरे से विचार करने और 'प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग' की वास्तविक प्रकृति का पता लगाने के लिए ओकैम के रेजर दृष्टिकोण को अपनाकर परीक्षण करने का निर्देश दिया जाता है। [पैरा 66(बी), 67,68,69]

उद्धृत केस कानून

श्री मुकुंद भवन ट्रस्ट और अन्य बनाम श्रीमंत छत्रपति उदयन राजे प्रतापसिंह भोंसले, 2024 एससीसी ऑनलाइन एससी 3844; भारत ग्लास ट्यूब लिमिटेड बनाम गोपाल ग्लास वर्क्स लिमिटेड [2008] 7 एससीआर 397 : (2008) 10 एस. सी. सी. 657- संदर्भित।

माइक्रोफाइबर्स इंक. बनाम गिरधर, 2006 एस. सी. सी. ऑनलाइन डेल 60; डार्ट इंडस्ट्रीज इंक. और एक अन्य बनाम टेक्नो प्लास्ट और अन्य, 2007 एस. सी. सी. ऑनलाइन डेल 892; मैटेल इंक. बनाम जयंत अग्रवाल, 2008 एस. सी. सी. ऑनलाइन डेल 1059; माइक्रोफाइबर्स इंक. बनाम गिरधर एंड कंपनी, 2009 एस. सी. सी. ऑनलाइन डेल 1647; प्रांडा ज्वैलरी प्राइवेट लिमिटेड बनाम आर्या 24 केटी, 2015 एससीसी ऑनलाइन बम 958; फन वर्ल्ड एंड रिसॉर्ट्स (इंडिया) प्राइवेट

लिमिटेड बनाम निमिल केके, 2020 एससीसी ऑनलाइन केर 219; स्मिथक्लाइन बीचम पीएलसी. वी.हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड, 1999 एस. सी. सी. ऑनलाइन डेल 965; ट्रैक्टर्स एंड फार्म इक्विपमेंट लिमिटेड बनाम स्टैंडर्ड कम्बाइन्स प्रा. लि. लिमिटेड, 2012 एस. सी. सी. ऑनलाइन मैड 5470; मोहन लाल बनाम सोना पेंट एंड हार्डवेयर, 2013 एस. सी. सी. ऑनलाइन डेल 1980; व्हर्लपूल ऑफ इंडिया लिमिटेड बनाम वीडियोकॉन इंडस्ट्रीज लिमिटेड, 2014 एस. सी. सी. ऑनलाइन बॉम 565; स्टैंडर्ड कॉर्पोरेशन इंडिया लिमिटेड बनाम ट्रैक्टर्स एंड फार्म इक्विपमेंट लिमिटेड, 2014 एस. सी. सी. ऑनलाइन मैड 850; फोटोक्विप इंडिया लिमिटेड बनाम दिल्ली फोटो स्टोर, 2014 एस. सी. सी. ऑनलाइन बम 1088; टी. टी. के. प्रेस्टीज लिमिटेड बनाम के. सी. एम. अप्लायंसेज प्राइवेट लिमिटेड, 2023 एस. सी. सी. ऑनलाइन डेल 2129 - संदर्भित।

एम्प बनाम यूटिलक्स [1972] आर. पी. सी. 103; इंटरलेगो ए. जी. बनाम टाइको इंडस्ट्रीज इंक और अन्य [1988] यू. के. पी. सी. 3; मेज़र बनाम स्टीन, 347 यू. एस. 201,74 एस. सीटी. 460, 98 एल. एड 630 (1954); एस्क्वायर इंक बनाम रिंगर, 591 एफ. 2डी 796 डी.सी. Cir. 1978); कीसेलस्टीन-कॉर्ड बनाम पर्ल, इंक. द्वारा सहायक उपकरण, 632 एफ. 2डी 989 (2डी Cir.1980); कैरोल बर्नहार्ट इंक. बनाम इकोनॉमी कवर कार्पोरेशन, 773 एफ.2डी 411 (2डी Cir.1985); ब्रैंडर इंटरनेशनल, इंक. बनाम कैस्केड पैसिफिक लम्बर कं., 834 एफ. 2डी 1142 (2डी Cir.1987); पिवट प्वाइंट इंटरनेशनल, इंक. बनाम चार्लीन प्रोड्स, इंक., 372 एफ. 3डी 913 (7वां Cir.2004); गैलियानो बनाम हाराह की संचालन कंपनी, 416 एफ. 3डी 411,419 (5वां Cir.2005); स्टार एथलेटिका, एल. एल. सी. बनाम वर्सिटी ब्रांड्स, इंक., 137 एस. सीटी. 1002,197 एल. एड. 2डी 354 (2017)- संदर्भित।

उद्धृत पुस्तकें और पत्रिकाएँ

पेरिस कन्वेंशन, 1883 (पेरिस कन्वेंशन); साहित्यिक और कलात्मक कार्यों के संरक्षण के लिए बर्न कन्वेंशन, 1886 (बर्न कन्वेंशन); बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार संबंधी पहलुओं पर समझौता, 1995 (ट्रिप्स) का हवाला दिया।

अधिनियमों की सूची

कॉपीराइट अधिनियम, 1957; डिजाइन अधिनियम, 2000; व्यापार और व्यापारिक चिह्न अधिनियम, 1958; अंग्रेजी पंजीकृत डिजाइन अधिनियम, 1949; दंड संहिता, 1860।

मुख्य शब्दों की सूची

कॉपीराइट अधिनियम, 1957 की खंड 15 (2); डिजाइन अधिनियम, 2000 की खंड 2 (डी); डिजाइन; वाद की अस्वीकृति; आदेश VII, नियम 11; कॉपीराइट संरक्षण; कलात्मक कार्य; आकार; विन्यास; पैटर्न; अलंकरण; रेखाओं या रंगों की संरचना;

'कार्यात्मक उपयोगिता' का परीक्षण; औद्योगिक प्रक्रिया; वैधानिक प्रावधानों, न्यायिक पूर्व निर्णय और तुलनात्मक न्यायशास्त्र द्वारा निर्देशित मामले की विशिष्ट जांच; स्वामित्व इंजीनियरिंग ड्राइंग; विस्तृत परीक्षा; कानून और तथ्य का मिश्रित प्रश्न; परीक्षण योग्य मुद्दे।

मामला उत्पन्न हुआ

सिविल अपीलीय क्षेत्राधिकार: दीवानी याचिका सं 5174/2025

अहमदाबाद में गुजरात उच्च न्यायालय के 22.10.2024 के ए. एफ. ओ. संख्या 119/2024 की दीवानी याचिका सं 5175/2025 के निर्णय और आदेश के साथ

पार्टियों के लिए प्रस्तुतियाँ

अपीलार्थी के लिए उपस्थिति:

श्याम दीवान, वरिष्ठ अधिवक्ता., राहुल चिटनिस, सुदिप्तो सरकार, हर्ष देसाई, सुश्री श्वेतल शेपाल, आदित्य खन्ना, सम्राट मेहता, चंदर शेखर अशरी।

उत्तरदाताओं के लिए अधिवक्ता:

चंदर एम. लाल, जे. साई दीपक, वरिष्ठ अधिवक्ता, मेसर्स खेतान एंड कंपनी के लिए स्मृति यादव, निरुपम लोढ़ा, धीरेन करानिया, क्षितिज पाराशर, गौतम वाधवा, सुश्री अन्नान्या मेहान, आर अभिषेक।

उच्चतम न्यायालय का निर्णय/आदेश

निर्णय

सूर्यकांत, जे.

अवकाश अनुदत्त

2. मुख्य रूप से एक कथित कॉपीराइट उल्लंघन से संबंधित पक्षों के बीच विमुकदमा में अहमदाबाद (**उच्च न्यायालय**) में गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा दिनांकित 22.10.2024 दिए गए एक सामान्य निर्णय से शीर्षक वाली अपीलें उत्पन्न होती हैं, जिसमें वडोदरा के चौथे अतिरिक्त जिला न्यायाधीश (**वाणिज्यिक न्यायालय**) के आदेश दिनांक 03.05.2024, 1908 (**सी. पी. सी.**) की सिविल प्रक्रिया संहिता के आदेश VII नियम 11 के तहत एक आवेदन की अनुमति देते हुए खारिज कर दिया गया था, और प्रतिवादी संख्या 2 द्वारा दायर मुकदमे को उसके मूल नंबर (**विवादित निर्णय**) पर बहाल कर दिया गया था।
3. अपील के पक्षकार अन्य बातों के साथ-साथ क्रायोजेनिक भंडारण टैंकों और वितरण प्रणालियों के आंतरिक भागों के डिजाइन और निर्माण के संबंध में बौद्धिक संपदा (**आईपी**) अधिकारों के कथित उल्लंघन से संबंधित विवाद में उलझे हुए हैं, जो औद्योगिक गैसों, तरलीकृत प्राकृतिक गैस (**एलएनजी**) और इस तरह के पदार्थों को प्रभावी ढंग से परिवहन करने के लिए ट्रेलर और अर्ध-ट्रेलरों पर लगाए गए हैं।

ए. तथ्य

4. ऐसा होने पर, इन दो अपीलों में अंतर्निहित घटनाओं के साझा अनुक्रम को देखते हुए, यह तथ्यात्मक मैट्रिक्स की विस्तृत परीक्षा के लिए एक उपयुक्त मोड़ प्रस्तुत करता है।
 - 4.1. पक्षकारों के बीच विवाद तब उत्पन्न हुआ जब इन अपीलों में प्रतिवादी संख्या 1, आईनॉक्स इंडिया लिमिटेड (आईनॉक्स) ने अपीलकर्ताओं, यानी क्रायोगैस इक्विपमेंट प्राइवेट लिमिटेड (क्रायोगैस) और एल. एन. जी. एक्सप्रेस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (एल. एन. जी. एक्सप्रेस) के खिलाफ वाणिज्यिक न्यायालय के समक्ष ट्रेडमार्क मुकदमा संख्या 3/2019 (मुकदमा) 24.09.2018 पर दायर किया। आईनॉक्स ने मुख्य रूप से आरोप लगाया कि क्रायोगैस, एल. एन. जी. एक्सप्रेस और अन्य ने दो अलग-अलग प्रकार के कॉपीराइट का उल्लंघन किया है: (i) आईनॉक्स (प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग) द्वारा विकसित एल. एन. जी. अर्ध-ट्रेलर्स के चित्र; और (ii) प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग (साहित्यिक कार्य) बनाने में आईनॉक्स कर्मचारियों द्वारा लिखे गए विवरण, प्रक्रियाएं, विवरण और कथन। माना जाता है कि इन आई. पी. को आईनॉक्स द्वारा भारतीय सड़कों के लिए उपयुक्त परिष्कृत एल. एन. जी. अर्ध-ट्रेलर्स के भंडारण और परिवहन के लिए विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विकसित किया गया था।
 - 4.2. इस मुकदमा में, आईनॉक्स ने निम्नलिखित के संदर्भ में राहत मांगी: (i) एक घोषणा कि क्रायोगैस, एल. एन. जी. एक्सप्रेस और अन्य ने आईनॉक्स के प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग, आई. पी. और लिटरेरी वर्क्स का उल्लंघन किया है; (ii) क्रायोगैस, एल. एन. जी. एक्सप्रेस और अन्य संबंधित पक्षों को आईनॉक्स के प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग या लिटरेरी वर्क्स के समान किसी भी चित्र या काम का उपयोग करने या पुनः पेश करने से रोकने के लिए एक स्थायी निषेधाज्ञा; (iii) विवादित उत्पादों के निर्माण से जुड़े किसी भी आई. पी. या जानकारी के उपयोग के खिलाफ एक स्थायी निषेधाज्ञा; (iv) क्रायोगैस, एल. एन. जी. एक्सप्रेस और अन्य को सभी जानकारी सौंपने का निर्देश देने वाला एक आदेश। विनाश के लिए सामग्री, जिसमें ड्राइंग, ट्रेलर, लेबल और स्वामित्व इंजीनियरिंग ड्राइंग का उपयोग करने वाली अन्य वस्तुएं शामिल हैं; और (v) कॉपीराइट उल्लंघन के लिए 2 करोड़ रुपये के हर्जाने का आदेश।
 - 4.3. इसके अलावा, आईनॉक्स ने सी. पी. सी. के आदेश XXXIX नियम 1 और 2 के तहत एक आवेदन दायर किया, जिसमें क्रायोगैस, एल. एन. जी. एक्सप्रेस और अन्य को मुकदमा विचाराधीनता रहने के दौरान अपने आई. पी. अधिकारों और गोपनीय जानकारी का उल्लंघन करने से रोकने के लिए एक विज्ञापन अंतरिम निषेधाज्ञा की मांग की गई।

4.4. इसके जवाब में, एल. एन. जी. एक्सप्रेस ने सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत अपना आवेदन दायर किया, जिसमें इस आधार पर मुकदमा को खारिज करने की मांग की गई कि यह कॉपीराइट अधिनियम, 1957 (**कॉपीराइट अधिनियम**) की खंड 15(2) के तहत बनाए रखने योग्य नहीं था। इसने मुख्य रूप से तर्क दिया कि प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग, जिसके लिए आईनॉक्स ने कॉपीराइट संरक्षण का दावा किया था, डिजाइन अधिनियम, 2000 (**डिजाइन अधिनियम**) की खंड 2 (डी) के तहत 'डिजाइन' की परिभाषा के भीतर आता है। इसने तर्क दिया कि आईनॉक्स ने डिजाइन अधिनियम के तहत उन्हें पंजीकृत करने में विफल रहने से उक्त चित्रों के लिए कॉपीराइट खो दिए थे। इसके अलावा, एल. एन. जी. एक्सप्रेस ने जोर देकर कहा कि कॉपीराइट किसी भी डिजाइन में मौजूद नहीं है जो कॉपीराइट मालिक या किसी अधिकृत लाइसेंसधारी द्वारा एक औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा पचास से अधिक बार पुनः प्रस्तुत किए जाने के बाद डिजाइन अधिनियम के तहत पंजीकृत या पंजीकृत होने में सक्षम है। विशेष रूप से, इसने 122 करोड़ रुपये की राशि का राजस्व उत्पन्न करने के आईनॉक्स के दावे का विरोध किया, यह तर्क देते हुए कि इस तरह की आय केवल एक औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा निर्मित क्रायोजेनिक अर्ध-ट्रेलरों की बिक्री द्वारा पचास पुनरुत्पादन की निर्धारित सीमा से अधिक स्वामित्व इंजीनियरिंग ड्राइंग का उपयोग करके प्राप्त की जा सकती थी। इस संदर्भ में, एल. एन. जी. एक्सप्रेस ने कहा कि खंड 15 (2) के आधार पर कॉपीराइट अधिनियम के तहत सुरक्षा की मांग नहीं की जा सकती है, और इस प्रकार मुकदमा सीमा पर आता है।

4.5. वाणिज्यिक न्यायालय ने 01.04.2022 को सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत एल. एन. जी. एक्सप्रेस द्वारा दायर आवेदन को स्वीकार कर लिया, जिसके परिणामस्वरूप आईनॉक्स की शिकायत और अंतरिम निषेधाज्ञा के लिए उसके आवेदन को खारिज कर दिया गया। आईनॉक्स ने वाणिज्यिक न्यायालय के आदेशों को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय के समक्ष दो अपीलें दायर कीं। 13.03.2024 को, उच्च न्यायालय ने एक सामान्य आदेश द्वारा से वाणिज्यिक न्यायालय के आदेश को दरकिनार करते हुए कहा कि उसने सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत आवेदन को अनुमति देने में गलती की, जिसके कारण शिकायत और अंतरिम निषेधाज्ञा के लिए अनुरोध दोनों को अस्वीकार कर दिया गया था। उच्च न्यायालय ने मामले को नए सिरे से विचार के लिए वाणिज्यिक न्यायालय को भेज दिया, मुकदमा को उसके मूल नंबर पर बहाल कर दिया और प्रत्येक के लिए अलग-अलग आदेश जारी करते हुए लंबित आवेदनों पर एक साथ निर्णय लेने का निर्देश दिया।

4.6. इसके बाद, उच्च न्यायालय के दिनांकित 03.05.2024 के निर्देशों के अनुपालन में, वाणिज्यिक न्यायालय ने उपरोक्त आवेदनों पर पुनर्विचार किया। अलग-अलग आदेशों के माध्यम से, इसने सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत एल. एन. जी. एक्सप्रेस के आवेदन की अनुमति दी, जिसके परिणामस्वरूप शिकायत को अस्वीकार कर दिया गया, और परिणामस्वरूप विज्ञापन अंतरिम निषेधाज्ञा के लिए आईनॉक्स के आवेदन को खारिज कर दिया गया।

4.7. आईनॉक्स ने एक बार फिर उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया, जिसमें वाणिज्यिक न्यायालय के दिनांकित 03.05.2024 के आदेशों को अलग-अलग अपीलों द्वारा से चुनौती दी गई। उच्च न्यायालय ने, बदले में, विवादित निर्णय के माध्यम से, निम्नलिखित तर्क के आधार पर वाणिज्यिक न्यायालय के आदेशों को दरकिनारा कर दिया और जारी किया है: (i) वाणिज्यिक न्यायालय ने कानून में यह मानते हुए गलती की कि स्वामित्व इंजीनियरिंग ड्राइंग डिजाइन अधिनियम की खंड 2 (डी) के तहत एक 'डिजाइन' के रूप में योग्य है और एक औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा से पचास से अधिक बार एक उत्पाद के निर्माण के लिए उपयोग किया गया है, जिससे इसे कॉपीराइट अधिनियम के तहत संरक्षण से बाहर रखा गया है; (ii) सी. पी. सी. के आदेश VII, नियम 11 के तहत एल. एन. जी. एक्सप्रेस का आवेदन खारिज कर दिया गया था, और मुकदमा को उसके मूल नंबर पर बहाल कर दिया गया था; (iii) सी. पी. सी. के आदेश XXXIX नियम 1 और 2 के तहत आईनॉक्स के अंतरिम निषेधाज्ञा आवेदन को बहाल कर दिया गया था; और (iv) पुनर्स्थापित अंतरिम निषेधाज्ञा आवेदन पर वाणिज्यिक न्यायालय द्वारा स्वतंत्र रूप से और यथासंभव शीघ्रता से, अधिमानतः आठ सप्ताह के भीतर निर्णय लेने का निर्देश दिया गया था।

4.8. इसलिए, तत्काल अपील की जाती है। हम इस स्तर पर स्पष्ट कर सकते हैं कि 29.01.2025 को अपना निर्णय सुरक्षित रखने और वर्तमान कार्यवाही लंबित रहने के बाद, वाणिज्यिक न्यायालय को उच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुसार अंतरिम आवेदन पर पक्षों को सुनने के लिए आगे बढ़ने की अनुमति दी गई थी। हालांकि, अंतिम आदेश के पारित होने प्रास्थगन आदेश का निर्देश दिया गया था।

बी. अपीलकर्ताओं की ओर से दलीलें

5. श्री श्याम दीवान, क्रायोगैस और एल. एन. जी. एक्सप्रेस की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता ने जोरदार तर्क दिया कि उच्च न्यायालय ने वाणिज्यिक न्यायालय के दिनांकित 03.05.2024 के आदेश को रद्द करने में गलती की, जिसने सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत उनके आवेदन की अनुमति दी थी। अपनी दलीलों के समर्थन में, उन्होंने निम्नलिखित प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत कीं:-

- (a) आईनॉक्स ने कॉपीराइट अधिनियम के तहत प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग्स के संरक्षण की मांग करते हुए मुकदमा दायर किया, जिसमें आरोप लगाया गया कि क्रियोगैस और एल. एन. जी. एक्सप्रेस ने चित्रों के कलात्मक तत्वों और साहित्यिक घटकों दोनों में अपने आई. पी. अधिकारों का उल्लंघन किया है जो प्रक्रियाओं और विवरणों का विवरण देते हैं। आईनॉक्स ने क्रायोगैस और एल. एन. जी. एक्सप्रेस को क्रायोजेनिक अर्ध-ट्रेलरों के द्वि-आयामी औद्योगिक चित्रों को त्रि-आयामी प्रतिनिधित्व में परिवर्तित करने से रोकने की मांग की। हालाँकि, इन याचिकाओं को पूरी तरह से खारिज कर दिया जाना चाहिए क्योंकि उन्हें कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) की प्रयोज्यता को दरकिनार करने के लिए एक विचार के रूप में उठाया गया है। मान लीजिए, अर्ध-ट्रेलरों का निर्माण केवल एक औद्योगिक और यांत्रिक प्रक्रिया द्वारा से किया जा सकता है।
- (b) दुनिया भर में एल. एन. जी. और क्रायोजेनिक सेमी-ट्रेलरों को अमेरिकन सोसाइटी ऑफ मैकेनिकल इंजीनियर्स (ए. एस. एम. ई.) और प्रेशर इक्विपमेंट डायरेक्टिव (पी. ई. डी.) जैसे अंतर्राष्ट्रीय मानक-निर्धारण निकायों के अनुसार डिजाइन किया गया है। यह देखते हुए कि इन ट्रेलरों का उपयोग क्रायोजेनिक तरल पदार्थों के परिवहन के लिए किया जाता है, उनके डिजाइन को देश-विशिष्ट नियमों का पालन करना चाहिए, जबकि अंतर्राष्ट्रीय मानक डिजाइन मापदंडों, सामग्री चयन और आंतरिक घटकों पर विस्तृत दिशानिर्देश निर्धारित करते हैं। तदनुसार, इसमें शामिल पक्षों सहित सभी संबंधित हितधारक पी. ई. डी. की शर्तों और भारत के सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करते हैं।
- (c) मुकदमा को कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) के तहत प्रतिबंधित किया गया है, क्योंकि प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग, जिसके लिए आईनॉक्स कॉपीराइट उल्लंघन का दावा करता है, डिजाइन अधिनियम के तहत पंजीकृत होने में सक्षम हैं। एक बार सेमी-ट्रेलरों को एक औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा से पचास से अधिक बार पुनः प्रस्तुत या निर्मित किया जाता है, तो ऐसे चित्रों के लिए कॉपीराइट संरक्षण कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) को देखते हुए समाप्त हो जाएगा।
- (d) प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग्स के संदर्भ में आई. पी. की रक्षा करने का अधिकार, हालांकि, आईनॉक्स को डिजाइन अधिनियम के तहत उपलब्ध होगा, बशर्ते कि उक्त ड्राइंग इसके तहत पंजीकृत हों। इसके अलावा, आईनॉक्स द्वारा निर्मित 'अर्ध-ट्रेलर' या 'सड़क वाहन ट्रेलर' डिजाइन अधिनियम की अनुसूची III के तहत वर्गीकरण के अंतर्गत आते हैं, विशेष रूप से वर्ग 12-10। नतीजतन,

आई. पी. उल्लंघन का दावा करने के लिए, आईनॉक्स को डिजाइन अधिनियम के तहत प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग को पंजीकृत करना चाहिए था।

- (e) कॉपीराइट अधिनियम का उद्देश्य कलात्मक कार्यों जैसे चित्रों, मूर्तियों और रचनात्मक अभिव्यक्ति के अन्य रूपों को विस्तारित अवधि के लिए संरक्षित करना है। इसके विपरीत, डिजाइन अधिनियम का उद्देश्य वाणिज्यिक दोहन को सुविधाजनक बनाने के लिए सीमित अवधि के लिए औद्योगिक डिजाइनों की सुरक्षा करना है। इस प्रकार विधानमंडल का उद्देश्य कॉपीराइट अधिनियम के बजाय डिजाइन अधिनियम के तहत स्वामित्व इंजीनियरिंग ड्राइंग जैसे औद्योगिक डिजाइनों के लिए सुरक्षा प्रदान करना था, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इस तरह के कार्यों को उचित कानूनी ढांचे के भीतर विनियमित किया जाए।
- (f) आईनॉक्स वाणिज्यिक न्यायालय के समक्ष अपनी शिकायत में एक औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा से उत्पादित अर्ध-ट्रेलरों की संख्या का खुलासा करने में विफल रहा है। इसके बजाय, यह चुनिंदा रूप से यह खुलासा करते हुए रणनीतिक मसौदा तैयार करने में लगा है कि इसने कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) के कानूनी प्रभाव को दरकिनार करते हुए 122 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया है। हालांकि, इस तरह के राजस्व का अनुमान पचास से अधिक अर्ध-ट्रेलरों के उत्पादन के परिणामस्वरूप लगाया जा सकता है, जिससे कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) के तहत प्रतिबंध लग सकता है। आईनॉक्स वाद हेतुक वैध कारण की भ्रामक धारणा बनाने के लिए टालने वाले मसौदे पर भरोसा नहीं कर सकता है। इन विवादों को **श्री मुकुंद भवन ट्रस्ट और अन्य बनाम श्रीमंत छत्रपति उदयन राजे प्रतापसिंह भोंसले¹** जैसे निर्णयों में निर्धारित अनुपात पर भरोसा करके पुष्ट किया गया था।
- (g) आईनॉक्स ने गलती से कहा है कि प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग डिजाइन अधिनियम की खंड 2 (डी) के तहत इस आधार पर 'डिजाइन' के रूप में पंजीकरण करने में सक्षम नहीं हैं कि इन चित्रों का उपयोग करके निर्मित उत्पादों में दृश्य अपील की कमी है, क्योंकि वे अर्ध-ट्रेलर के आंतरिक पात्र से संबंधित हैं, जो छिपा हुआ रहता है। इस दावे को खारिज कर दिया जाना चाहिए, क्योंकि चित्र डिजाइन अधिनियम के तहत पंजीकरण करने में सक्षम डिजाइनों की श्रेणी में आते हैं लेकिन पंजीकृत नहीं किए गए हैं। इसके अलावा, यह सुझाव देना गलत है कि अर्ध-ट्रेलरों में दृश्य अपील की कमी है, यह देखते हुए कि चित्र एक अर्ध-ट्रेलर के बाहरी आकार और घटकों को भी शामिल करते हैं। किसी भी मामले में, दृश्य अपील का प्रश्न स्वाभाविक रूप से व्यक्तिपरक

हैं और सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत आवेदन पर विचार करने के लिए एक निर्धारक कारक नहीं हो सकता है।

- (h) मुकदमा में वाणिज्यिक न्यायालय के समक्ष जांच का दायरा यह निर्धारित करने तक सीमित है कि क्या प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग डिजाइन अधिनियम के तहत पंजीकरण करने में सक्षम हैं और, यदि वे इस तरह से पंजीकृत नहीं हैं, तो क्या वे एक बार औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा से वस्तुओं पर लागू होने वाले कॉपीराइट अधिनियम के संरक्षण को खो देते हैं। इस तरह के चित्रों के कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) द्वारा लगाई गई सीमाओं के अधीन होने का सवाल विशुद्ध रूप से कानून का सवाल है, जिसका निर्णय आगे सबूत पेश करने की आवश्यकता के बिना, शिकायत में कथनों के प्रथमदृष्टया मूल्यांकन के आधार पर किया जाना चाहिए।
- (i) अंत में, आईनॉक्स का यह दावा कि शिकायत प्रतिवादी संख्या 3 और 4 द्वारा गोपनीय जानकारी और व्यापार रहस्यों की कथित चोरी से भी संबंधित है, को सीमा पर खारिज कर दिया जाना चाहिए। शिकायत में ऐसे दावों के बारे में कोई खास प्रार्थना नहीं है, और कॉमन लॉ अधिकार से पैदा होने वाले इस तरह के किसी भी कथित उल्लंघन पर कमर्शियल कोर्ट के बजाय सिविल कोर्ट में कार्रवाई की जा सकती है, जो मुख्य रूप से सिर्फ IP अधिकारों से जुड़े मामलों पर ही फैसला कर सकता है। इसके अलावा, शिकायत के अवलोकन से पता चलता है कि मुकदमा कॉपीराइट अधिनियम की खंड 62 (2) के तहत कॉपीराइट उल्लंघन के लिए दायर किया गया है, जो वाणिज्यिक न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में आता है।

ग. प्रतिवादी संख्या 1 की ओर से दलीलें

6. श्री चंदर एम. लाल और श्री जे. साई दीपक, आईनॉक्स का प्रतिनिधित्व करने वाले विद्वान वरिष्ठ वकीलों ने क्रायोगैस और एल. एन. जी. एक्सप्रेस द्वारा किए गए दावों का खंडन किया और इसके बजाय निम्नलिखित प्रस्तुतियाँ प्रस्तुत कीं:-

- (a) मुकदमा कॉपीराइट की दो अलग-अलग श्रेणियों से संबंधित है: प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग और साहित्यिक कार्य। नतीजतन, मुकदमा में मांगी गई नक्काशी भी प्रकृति में अलग हैं। नतीजतन, प्रत्येक आईपी दावे का स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन किया जाना चाहिए, इसकी अनूठी विशेषताओं और कानूनी निहितार्थों पर उचित विचार किया जाना चाहिए।
- (b) औद्योगिक चित्र, जैसे कि प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग, कॉपीराइट अधिनियम की खंड 2 (सी) के तहत 'कलात्मक कार्यों' की परिभाषा के अंतर्गत आते हैं। एक कलात्मक कार्य को कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) का आह्वान करके कॉपीराइट संरक्षण से केवल तभी वंचित किया जा सकता है जब ऐसा कार्य या तो

पंजीकृत हो या डिजाइन अधिनियम के तहत पंजीकृत होने में सक्षम हो। इसके अलावा, प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग एक क्रायोजेनिक कंटेनर के आंतरिक घटकों से संबंधित है और डिजाइन अधिनियम की खंड 2 के तहत अपवाद द्वारा बाहर रखा गया है, जिसमें कहा गया है कि एक पंजीकृत डिजाइन में **'निर्माण का कोई भी तरीका या सिद्धांत या कुछ भी शामिल नहीं है जो पदार्थ में केवल एक यांत्रिक उपकरण है'**। इसके अलावा, इन चित्रों में दृश्य अपील की कमी है, जो डिजाइन अधिनियम के तहत 'डिजाइन' के लिए एक आवश्यक मानदंड है। तदनुसार, कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) लागू नहीं होती है, और प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग को डिजाइन अधिनियम के तहत पंजीकरण करने में सक्षम नहीं माना जा सकता है।

- (c) विचाराधीन साहित्यिक कृति कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) के तहत प्रतिबंध के अधीन नहीं है। वाणिज्यिक न्यायालय ने यह निष्कर्ष निकालते हुए गलती की कि विवरण, प्रक्रिया और विवरण सहित साहित्यिक कार्य, केवल प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग और उसमें निहित जानकारी का संदर्भ है। इस तरह की व्याख्या गलत तरीके से मानती है कि वाद में बताए गए सभी अधिकार आंतरिक रूप से प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग से जुड़े हुए हैं। यह दृष्टिकोण कॉपीराइट कानून के मौलिक सिद्धांतों के साथ असंगत है, जो यह मानता है कि कॉपीराइट संरक्षण की प्रत्येक श्रेणी अलग है और इसका स्वतंत्र रूप से मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
- (d) गोपनीय जानकारी की चोरी से उत्पन्न उल्लंघन एक अलग कानूनी मुद्दा है और यह कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) द्वारा लगाई गई सीमाओं के अधीन नहीं है। अदालतों ने लगातार माना है कि गोपनीय जानकारी एक अलग कानूनी अवधारणा है जिसका स्वतंत्र मूल्य है, जो सामान्य कानून सिद्धांतों के तहत सुरक्षा प्रदान करती है। तदनुसार, गोपनीय जानकारी के दुरुपयोग का मूल्यांकन उसके गुण-दोष के आधार पर किया जाना चाहिए।
- (e) विचाराधीन तीन आईपी से संबंधित मुद्दे अलग और अलग हैं, एक तथ्य यह है कि वाणिज्यिक न्यायालय सीपीसी के आदेश VII नियम 11 के तहत एलएनजी एक्सप्रेस के आवेदन को अनुमति देते समय सराहना करने में विफल रहा। वाणिज्यिक न्यायालय इस गलत धारणा के तहत आगे बढ़ा कि एक 'मूल कलात्मक कार्य' स्वचालित रूप से कॉपीराइट अधिनियम के तहत सुरक्षा खो देता है जब इसे एक औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा से किसी वस्तु पर लागू किया जाता है। वाणिज्यिक न्यायालय डिजाइन अधिनियम के तहत 'डिजाइन' के सही अर्थ और दायरे पर विचार करने में विफल रहा। इसके अलावा, साहित्यिक कृति के उल्लंघन और

गोपनीय जानकारी की चोरी से संबंधित दावे सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के दायरे से बाहर हैं और इन्हें संक्षेप में खारिज नहीं किया जा सकता था।

- (f) सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत आवेदन पर निर्णय लेते समय यह निर्धारित नहीं किया जा सकता है कि क्या मूल कलात्मक कार्य डिजाइन अधिनियम के तहत 'पंजीकृत होने में सक्षम डिजाइन' के रूप में योग्य है या नहीं। इस स्तर पर, अदालत का अधिकार क्षेत्र यह पता लगाने के लिए प्रथमदृष्टया जांच करने तक सीमित है कि क्या शिकायत वाद हेतुक कारण का खुलासा करती है या नहीं। इस मुद्दे में कानून और तथ्य का एक मिश्रित प्रश्न शामिल है और इस प्रकार इसकी आवश्यकता है
- (g) आईनॉक्स ने अपने मुकदमा में क्रायोगैस, एल. एन. जी. एक्सप्रेस और अन्य को द्वि-आयामी स्वामित्व इंजीनियरिंग ड्राइंग को त्रि-आयामी वस्तुओं में परिवर्तित करने से रोकने के लिए एक निषेधाज्ञा की भी मांग की है। स्थानीय आयुक्त की रिपोर्ट दिनांक 26.09.2018 इस संबंध में ठोस सबूत प्रदान करती है, जिससे पता चलता है कि आईनॉक्स की स्वामित्व सामग्री वाली कई फाइलें-जिनमें निरीक्षण रिपोर्ट, सामान्य परीक्षण योजनाएँ, दुकान वेल्ड योजनाएँ, गुणवत्ता नियंत्रण कार्यक्रम और ड्राइंग डिजाइन गणना शामिल हैं-एल. एन. जी. एक्सप्रेस और क्रायोगैस के परिसर में पाई गई थीं। ये दस्तावेज़ आईनॉक्स की मालिकाना सामग्री और उत्पादों की गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रियाओं से संबंधित हैं, जो अनधिकृत उपयोग के दावे की पुष्टि करते हैं।

डी. मुद्दे

7. तथ्यात्मक मैट्रिक्स को देखने के बाद और पक्षों द्वारा प्रस्तुत प्रतिद्वंद्वी विवादों पर विचार करने पर, यह स्पष्ट है कि एकमात्र मुद्दा जो हमारे विश्लेषण को आमंत्रित करता है, सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत आवेदन की रखरखाव के इर्द-गिर्द घूमता है। हालांकि, अंतर्निहित विवाद की अस्पष्ट प्रकृति को देखते हुए, डिजाइन अधिनियम की प्रयोज्यता के बारे में पक्षों की व्याख्याओं में एक मौलिक विसंगति से उपजी, हम निम्नलिखित मुद्दों पर निर्णय लेना और उनका विश्लेषण करना उचित समझते हैं:-
- i. यह निर्धारित करने के लिए क्या मापदंड हैं कि क्या कोई काम या वस्तु कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) में निर्धारित सीमा के भीतर आती है, जिससे इसे डिजाइन अधिनियम की खंड 2 (डी) के तहत 'डिजाइन' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है?

- ii. क्या उच्च न्यायालय ने वाणिज्यिक न्यायालय के आदेश को रद्द करने और इस प्रकार सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत आवेदन को खारिज करने में गलती की?

ई. विश्लेषण

ई.1 मुद्दा संख्या 1: यह निर्धारित करने के लिए मानदंड कि क्या कोई काम या वस्तु कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) में निर्धारित सीमा के भीतर आती है।

8. हम शुरू में ही स्पष्ट कर सकते हैं कि यहां चर्चा डिजाइन अधिनियम के तहत एक 'डिजाइन' और एक 'कलात्मक कार्य' के बीच अंतर निर्धारित करने तक सीमित होगी जो कॉपीराइट संरक्षण की गारंटी दे सकती है। सटीक होने के लिए, हम मामले के गुण-दोष को स्पष्ट रूप से या निहित रूप से संबोधित नहीं कर रहे हैं। यह जाँच अभिकल्पना अधिनियम की प्रयोज्यता के संदर्भ में पक्षों द्वारा व्यक्त आंतरिक असहमति से प्रेरित हुई है। व्याख्या में इस तरह का विचलन एक दिलचस्प संयोजन और शायद एक दूसरे क्षेत्र को प्रकाश में लाता है जिसे इस न्यायालय द्वारा अतीत में संबोधित नहीं किया गया है। इस संदर्भ में, हम दो-आयामी दृष्टिकोण द्वारा से एक निर्णायक विश्लेषण करके इस अंतर को पाटना उचित समझते हैं:- (i) भारत में वर्तमान आईपी वैधानिक ढांचे की जांच करना; और (ii) विभिन्न क्षेत्राधिकारों में विचार किए गए मानदंडों और अपनाए गए परीक्षणों का मूल्यांकन करना। अंत में, इन दो पहलुओं के आधार पर, हम (iii) यह निर्धारित करने के लिए विचार किए जाने वाले निश्चित कारकों को निर्धारित करना चाहते हैं कि क्या किसी वस्तु को कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) की सीमा के भीतर कॉपीराइट अधिनियम या डिजाइन अधिनियम के तहत संरक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

ई.1.1 वर्तमान आई. पी. वैधानिक ढांचे

9. आई. पी. अधिकारों का उद्देश्य मूल रूप से दूसरों को संरक्षित आई. पी. रखने, उपयोग करने या अलग करने से रोकना है, जिससे मालिक को अपनी बुद्धि के उत्पाद से लाभ उठाने में सक्षम बनाया जा सके। भारत में, आईपी अधिकारों में पेटेंट, ट्रेडमार्क, कॉपीराइट, डिजाइन और भौगोलिक संकेतों सहित अमूर्त संपत्तियों का एक व्यापक स्पेक्ट्रम शामिल है, जिनमें से प्रत्येक अलग-अलग कानूनों द्वारा शासित और संरक्षित है। ये कानून रचनाकारों या आविष्कारकों को मान्यता अर्जित करने और अपने नवाचारों से इस तरह से वित्तीय लाभ प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं जो उन्हें जनहित के साथ संतुलित करता है। हालांकि, वर्तमान विश्लेषण के उद्देश्यों के लिए, हमारी परीक्षा कॉपीराइट अधिनियम और डिजाइन अधिनियम के बीच के प्रतिच्छेदन तक सीमित होगी।

10. भारत में, कॉपीराइट को कॉपीराइट अधिनियम, 1957 द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जिसे वाणिज्यिक शोषण और नवीन कार्यों के निर्माण को प्रोत्साहित करने सहित कॉपीराइट मालिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए अधिनियमित किया गया था। कॉपीराइट एक वैधानिक और नकारात्मक अधिकार है, जो कॉपीराइट की गई सामग्री की अनधिकृत प्रतिलिपि बनाने से रोकता है। अधिनियम की खंड 14 के तहत, कॉपीराइट मालिकों को विशेष अधिकारों का एक बंडल दिया जाता है, जिसमें पुनः पेश करने, प्रतियां जारी करने, सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन करने और अनुवाद और अनुकूलन बनाने का अधिकार शामिल है।
11. 'कॉपीराइट' शब्द को कॉपीराइट अधिनियम की खंड 14 के तहत परिभाषित किया गया है जिसका अर्थ है "अधिनियम के प्रावधानों के अधीन, किसी काम या उसके किसी महत्वपूर्ण हिस्से के संबंध में निम्नलिखित में से किसी भी कार्य को करने या करने के लिए अधिकृत करने का अनन्य अधिकार।" यह कार्यों के संरक्षण का समर्थन करता है:
- (i) साहित्यिक, नाटकीय या संगीतमय कार्य, जो कंप्यूटर प्रोग्राम नहीं है; (ii) एक कंप्यूटर प्रोग्राम; (iii) एक कलात्मक कार्य; (iv) एक सिनेमेटोग्राफ फिल्म; और (v) एक ध्वनि रिकॉर्डिंग। इसे अधिक स्पष्ट शब्दों में रखने के लिए, प्रावधान में नियोजित भाषा इस प्रकार है:

"14. प्रतिलिप्याधिकार का अर्थ- इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए, "प्रतिलिप्याधिकार" का अर्थ है इस अधिनियम के प्रावधानों के अधीन, किसी कार्य या उसके किसी महत्वपूर्ण हिस्से के संबंध में निम्नलिखित में से किसी भी कार्य को करने या करने के लिए अधिकृत करने का अनन्य अधिकार, अर्थात्:-

(a) एक साहित्यिक, नाटकीय या संगीत रचना के मामले में, जो एक कंप्यूटर प्रोग्राम नहीं है,-

(i) इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से किसी भी माध्यम में भंडारण सहित किसी भी सामग्री के रूप में काम को पुनः पेश करना;

(ii) उन कार्यों की प्रतियां जनता को जारी करना जो पहले से ही प्रचलन में नहीं हैं;

(iii) सार्वजनिक रूप से काम करना, या जनता को बताना;

(iv) कार्य के संबंध में कोई सिनेमेटोग्राफ फिल्म या ध्वनि रिकॉर्डिंग बनाना;

(v) कार्य का कोई भी अनुवाद करना;

(vi) कार्य का कोई भी अनुकूलन करना;

(vii) उपखंड (i) से (vi) में कार्य के संबंध में निर्दिष्ट किसी भी कार्य को अनुवाद या कार्य के अनुकूलन के संबंध में करना;

(b)कंप्यूटर प्रोग्राम के मामले में, -

(i) खंड (क) में निर्दिष्ट किसी भी कार्य को करना;

(ii) वाणिज्यिक किराये पर या बिक्री के लिए या वाणिज्यिक किराए पर कंप्यूटर कार्यक्रम की कोई प्रति बेचना या देना: बशर्ते कि ऐसा वाणिज्यिक किराया कंप्यूटर कार्यक्रमों के संबंध में लागू नहीं होता है जहां कार्यक्रम स्वयं किराये का आवश्यक उद्देश्य नहीं है।

(ग) किसी कलात्मक कृति के मामले में, -

(i) कार्य को किसी भी भौतिक रूप में पुनः प्रस्तुत करना, जिसमें -

(A) इलेक्ट्रॉनिक या अन्य माध्यमों से किसी भी माध्यम में इसका भंडारण;

(B) या द्वि-आयामी कार्य के त्रि-आयामों में चित्रण;

(C) या त्रि-आयामी कार्य के द्वि-आयामों में चित्रण;

(ii) काम को जनता तक पहुँचाने के लिए;

(iii) उन कृतियों की प्रतियां जनता को जारी करना जो पहले से ही प्रचलन में नहीं हैं।

(iv) किसी भी सिनेमेटोग्राफ फिल्म में काम को शामिल करना;

(v) कार्य का कोई भी अनुकूलन करना;

(vi) उपखंड (i) से (iv) में कार्य के संबंध में निर्दिष्ट किसी भी कार्य को कार्य के अनुकूलन के संबंध में करना;

(घ) सिनेमेटोग्राफ फिल्म के मामले में -

(i) फिल्म की एक प्रति बनाना, जिसमें-(ए) उसके हिस्से के रूप में किसी भी छवि का एक फोटोग्राफ; या (बी) इलेक्ट्रॉनिक या अन्य माध्यमों से किसी भी माध्यम में इसे संग्रहीत करना;

(ii) वाणिज्यिक किराये पर या बिक्री के लिए या ऐसे किराए पर फिल्म की कोई प्रति बेचना या देना;

(iii) दृश्य को जनता तक पहुँचाना;

(ङ) ध्वनि रिकॉर्डिंग के मामले में, -

(i) इलेक्ट्रॉनिक या अन्य माध्यमों से किसी भी माध्यम में भंडारण सहित इसे मूर्त रूप देने वाली कोई अन्य ध्वनि रिकॉर्डिंग करना;

(ii) ध्वनि रिकॉर्डिंग की किसी भी प्रति को वाणिज्यिक किराये पर या बिक्री के लिए या ऐसे किराए पर देने के लिए बेचना या देना;

(iii) ध्वनि रिकॉर्डिंग को जनता तक पहुँचाना।"

12. 2000 में डिजाइन अधिनियम के अधिनियमन ने भारत में डिजाइनों के लिए एक अलग सुरक्षा व्यवस्था स्थापित की। डिजाइन अधिनियम खंड 2 (डी) के तहत 'डिजाइन' शब्द को परिभाषित करके कॉपीराइट अधिनियम के साथ ओवरलैप को कम करने का प्रयास

करता है, "किसी भी वस्तु पर लागू होने वाली रेखाओं या रंगों के आकार, विन्यास, पैटर्न, आभूषण या संरचना की विशेषताएँ, चाहे वह दो आयामी हो या त्रि-आयामी या दोनों रूपों में, किसी भी औद्योगिक प्रक्रिया या साधन से, चाहे वह मैनुअल, मैकेनिकल या रासायनिक, अलग या संयुक्त हो, जो तैयार लेख में केवल आंख द्वारा अपील करता है और आंका जाता है, लेकिन इसमें निर्माण का कोई भी तरीका या सिद्धांत या कुछ भी शामिल नहीं है जो पदार्थ में केवल एक यांत्रिक उपकरण है, और इसमें कोई भी व्यापार चिह्न शामिल नहीं है। ट्रेड एंड मर्चेन्डाइज मार्क्स एक्ट, 1958 (1958 का 43) की खंड 2 की उप-खंड (1) के खंड (v) या भारतीय दंड संहिता (1860 का 45) की खंड 479 में परिभाषित संपत्ति चिह्न या किसी भी कलात्मक कार्य में परिभाषित जैसा कि कॉपीराइट अधिनियम, 1957 (1957 का 14) की खंड 2 के खंड (सी) में परिभाषित किया गया है।" आईपी का यह पहलू इस प्रकार काम की उपयोगिता के साथ-साथ इसकी दृश्य अपील और सौंदर्य पर ध्यान केंद्रित करता है, जिससे यह उपभोक्ता वरीयता या वाणिज्यिक व्यवहार्यता निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण कारक बन जाता है।

13. यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि डिजाइन अधिनियम की खंड 2 (डी), जो ऊपर पुनः प्रस्तुत की गई है, कॉपीराइट अधिनियम की खंड 2 (सी) के तहत निहित 'कलात्मक कार्यों' को शामिल करने पर स्पष्ट रूप से रोक लगाती है। अधिक स्पष्ट करने के लिए, कॉपीराइट अधिनियम में 'कलात्मक कार्य' अभिव्यक्ति को परिभाषित किया गया है जो इस प्रकार है:

"2. व्याख्या— इस अधिनियम में, जब तक कि संदर्भ में अन्यथा आवश्यक न हो -

....

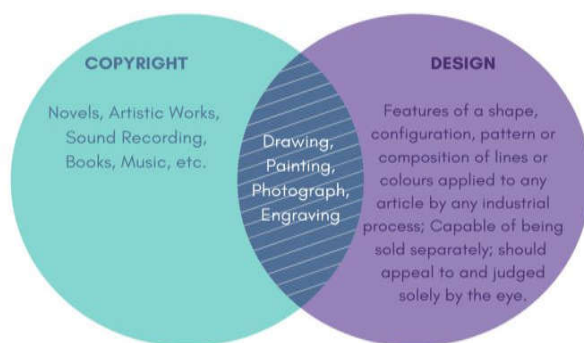
(ग) "कलात्मक कार्य" का अर्थ है -

(i) एक चित्र, एक मूर्तिकला, एक चित्र (एक आरेख, मानचित्र, चार्ट या योजना सहित), एक उत्कीर्णन या एक तस्वीर, चाहे ऐसी किसी भी कृति में कलात्मक गुणवत्ता हो या न हो।

(ii) वास्तुकला का एक काम; और

(iii) कलात्मक शिल्प कौशल का कोई अन्य कार्य;

14. इन प्रावधानों में प्रयुक्त स्पष्ट भाषा के बावजूद, प्रतिच्छेदन का एक छोटा सा सुविधाजनक बिंदु मौजूद है जिसमें एक 'डिजाइन' चित्रों या चित्रों जैसे 'कलात्मक कार्यों' के साथ समानताएं साझा करता है, जिन्हें कॉपीराइट संरक्षण दिया जा सकता है। इस समानता को नीचे दिए गए वेन आरेख में उचित रूप से चित्रित किया गया है। हालाँकि, हम जल्दबाजी में चेतावनी दे सकते हैं कि यह केवल एक उदाहरणात्मक छवि है और प्रकृति में संपूर्ण नहीं है।



15. ऐसा प्रतीत होता है कि इस पेनम्ब्रा का सारांश दिया गया है और कुछ हद तक, कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) में प्रवर्धित किया गया है। हम ऐसा इसलिए कहते हैं, क्योंकि प्रावधान स्वयं यह बताता है कि "किसी भी डिजाइन में कॉपीराइट, जो डिजाइन अधिनियम, 2000 के तहत पंजीकृत होने में सक्षम है, लेकिन जिसे इस तरह से पंजीकृत नहीं किया गया है, जैसे ही कोई भी वस्तु जिस पर डिजाइन लागू किया गया है, कॉपीराइट के मालिक द्वारा या उसके लाइसेंस के साथ, किसी अन्य व्यक्ति द्वारा एक औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा पचास से अधिक बार पुनः प्रस्तुत किया गया है।"
16. हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (1) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि 'कॉपीराइट' डिजाइन अधिनियम के तहत संरक्षित 'डिजाइन' में नहीं रहेगा। इस प्रकार यह प्रावधान स्थापित करता है कि एक बार 'डिजाइन' पंजीकृत हो जाने के बाद, कोई भी कॉपीराइट संरक्षण अस्तित्व में नहीं रहता है। जबकि, जैसा कि पहले ही दोहराया जा चुका है, कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) स्पष्ट करती है कि कोई भी डिजाइन जो डिजाइन अधिनियम के तहत पंजीकृत होने में सक्षम है, यदि पंजीकृत नहीं है, तो इस तरह के डिजाइन में कॉपीराइट संरक्षण समाप्त हो जाएगा जब उस डिजाइन को किसी भी वस्तु पर लागू किया जाता है और एक औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा 50 गुना से अधिक बार पुनः प्रस्तुत किया जाता है, या तो मालिक या लाइसेंसधारी द्वारा।
17. कॉपीराइट योग्य कलात्मक कार्यों और डिजाइनों के बीच अंतर्निहित ओवरलैप के कारण रेखाएं शायद धुंधली लगती हैं। इसे अधिक सरलता से कहने के लिए, कुछ डिजाइन हो सकते हैं जो कॉपीराइट संरक्षण के हकदार हो सकते हैं, और इसके विपरीत, कुछ कलात्मक कार्य हो सकते हैं जो औद्योगिक रूप से लागू होने पर अपने कॉपीराइट संरक्षण को खो देते हैं। किसी भी दीर्घकालिक कॉपीराइट संरक्षण की मांग से डिजाइनों पर एक स्पष्ट प्रतिबंध होने के कारण इस उलझन को और बढ़ाया जाता है।

ई.1.2. विभिन्न क्षेत्राधिकारों में अपनाए गए मानदंड

18. इस कानूनी पहली को हल करने के लिए, डिजाइन अधिनियम बनाम कॉपीराइट अधिनियम के तहत संरक्षण के लिए योग्य कार्यों को अलग करने के लिए स्पष्ट मानदंड स्थापित करना आवश्यक है। इस दिशा में, हम स्थापित न्यायशास्त्र और तुलनात्मक कानूनी ढांचे की ओर रुख करते हैं, और इस प्रकार जांच की है: (i) भारत में न्यायालयों

द्वारा अपनाया गया दृष्टिकोण; (ii) संयुक्त राज्य अमेरिका (यू. एस.) में न्यायालयों द्वारा नियोजित कारक; और (iii) व्यापक अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत जो कॉपीराइट और डिजाइन संरक्षण के बीच परस्पर क्रिया पर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

19. इन दृष्टिकोणों को संश्लेषित करके, हमारा लक्ष्य एक निश्चित परीक्षण तैयार करना है जो संबंधित कानूनों के तहत प्रदान किए गए संरक्षण के दायरे पर स्पष्टता प्रदान करेगा।

ई.1.2.1 भारत में न्यायालयों द्वारा अपनाया गया दृष्टिकोण

20. कॉपीराइट अधिनियम और डिजाइन अधिनियम के बीच अंतर को हल करने के लिए भारत के विभिन्न उच्च न्यायालयों द्वारा लागू किए गए परीक्षण को दो अलग-अलग दृष्टिकोणों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

- i. कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) की व्याख्या: इसमें दोनों कानूनों के बीच ओवरलैप या चौराहों पर पर्दा वापस खींचना और यह पता लगाना शामिल है कि क्या कोई वस्तु 'मूल कलात्मक कार्य' होने के लिए कॉपीराइट अधिनियम के तहत संरक्षण के योग्य होगी या क्या यह डिजाइन अधिनियम के तहत संरक्षण अर्जित करेगी।
- ii. लेख की 'कार्यात्मक उपयोगिता' की जांच: इसके लिए एक मूल्यांकन की आवश्यकता है कि क्या लेख केवल कलात्मक अभिव्यक्ति से परे एक कार्यात्मक उद्देश्य को पूरा करता है। यदि काम की प्राथमिक विशेषता सौंदर्य अपील के बजाय इसकी कार्यात्मक उपयोगिता है, तो यह डिजाइन अधिनियम के तहत सुरक्षा प्राप्त करने के योग्य नहीं होगा।

ई.1.2.1.1 कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) की व्याख्या

21. इस फैसले के पैराग्राफ 16 और 17 में पहले ही समझाया जा चुका है कि डिजाइन अधिनियम की खंड 2 (डी) के तहत परिभाषित 'डिजाइन' को 'कलात्मक कार्य' होने की आड़ में कॉपीराइट अधिनियम द्वारा संरक्षण नहीं दिया जा सकता है। हालांकि स्पष्ट रूप से 'कलात्मक कार्य' और 'डिजाइनों' के बीच एक संकीर्ण प्रतिच्छेदन प्रतीत होता है, विशेष रूप से चित्रों, मूर्तियों या चित्रों के मामले में, खंड 15 (2) इन अतिव्याप्तियों को अस्पष्ट करने और एक स्पष्ट अंतर बनाने का प्रयास करती है ताकि किसी भी अनपेक्षित अव्यवस्था को रोका जा सके। इस प्रकार इस मुद्दे का सार किसी लेख को या तो डिजाइन अधिनियम के तहत 'डिजाइन' या कॉपीराइट अधिनियम के तहत 'कलात्मक कार्य' के रूप में सही ढंग से वर्गीकृत करने में निहित है।
22. दोनों कानूनों के बीच इस अंतर्विरोध को दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा **माइक्रोफाइबर्स इंक बनाम गिरधर**² में व्यापक रूप से संबोधित किया गया था, जहां विवाद प्रतिवादी द्वारा उसमें असबाब कपड़े के कुछ पैटर्न के निर्माण और बिक्री में कॉपीराइट उल्लंघन से संबंधित था। अभियोक्ता, एक अमेरिकी कंपनी, ने कपड़े पर लागू चित्रों के लिए विशेष

अधिकारों का दावा करते हुए कहा कि उन्होंने उसी के लिए कॉपीराइट पंजीकरण की मांग की थी और प्रतिअभियोक्ता से हर्जाने की मांग की थी।

23. दिल्ली उच्च न्यायालय ने अभियोक्ता को कॉपीराइट अधिनियम के तहत किसी भी तरह के संरक्षण से इनकार कर दिया। इसने अपना निर्णय निम्नलिखित निश्चित कारकों पर आधारित किया: (i) वादी का काम अपने आप में एक पेंटिंग के रूप में एक कला का टुकड़ा नहीं है, इसके बावजूद कि एक विशेष 'विन्यास' को जगह देने के लिए श्रम और नवीनता लागू की गई है। इस विन्यास में रूपांकनों और डिजाइनों को शामिल किया गया है, जो अपने आप में मूल नहीं हैं; (ii) इस तरह की व्यवस्था का उद्देश्य उन्हें औद्योगिक उपयोग में लाना था और इसकी कोई उपयोगिता या स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है; (iii) वस्त्र वस्तुओं पर कपड़े के डिजाइनों को डिजाइन नियम, 2001 की कक्षा 5 के तहत शामिल करके डिजाइन संरक्षण के उचित विषय के रूप में वर्गीकृत किया गया है; (iv) विधायी इरादे को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए, जो वाणिज्यिक दोहन के लिए एक निश्चित अवधि के लिए काम के निर्माता की रक्षा करना है। कॉपीराइट अधिनियम के तहत संरक्षण लेखक के जीवनकाल के लिए है और साठ साल की अतिरिक्त अवधि है, जो डिजाइन अधिनियम के मामले में ऐसा नहीं है, जहां अवधि बहुत कम है; (v) कॉपीराइट अधिनियम की खंड 2 (सी) के तहत परिभाषित 'कलात्मक कार्य' को डिजाइन अधिनियम की खंड 2 (डी) के तहत 'डिजाइन' की परिभाषा से बाहर रखा गया है, उदाहरण के लिए, एम. एफ. की पेंटिंग जैसे कार्यों को बाहर रखा गया है। हुसैन; (vi) यह स्पष्ट है कि यह डिजाइन अधिनियम है जो इस मामले में अभियोक्ता को संरक्षण देगा न कि कॉपीराइट अधिनियम, क्योंकि विचाराधीन कार्य को 'कलात्मक कार्य' के रूप में लेबल नहीं किया जा सकता है।
24. दिल्ली उच्च न्यायालय ने बाद के निर्णयों में **माइक्रोफाइबर । (उपरोक्त)** में अनुपात का अनुसरण किया और पुष्टि की, जैसे कि **डार्ट इंडस्ट्रीज इंक और एक अन्य बनाम टेक्नो प्लास्ट और अन्य,**³ में जहां विवाद वादी से संबंधित था, जो 'टपरवेयर' उत्पादों का निर्माण कर रहे थे, यह आरोप लगाते हुए कि प्रतिवादियों ने आश्चर्यजनक रूप से समान उत्पादों का उत्पादन करके अपने कॉपीराइट और डिजाइन अधिकारों का उल्लंघन किया था। उच्च न्यायालय ने कहा कि डिजाइन अधिनियम के तहत एक बार डिजाइन पंजीकृत होने के बाद कोई कॉपीराइट संरक्षण नहीं रहेगा। यह अंतिम उत्पाद डिजाइन बनाने के लिए उत्पाद चित्रों से संबंधित एक मामला था, जिसके लिए उक्त चित्रों में कॉपीराइट दावे को खारिज कर दिया गया था।
25. इस संदर्भ में उच्च न्यायालय ने आगे कहा:
- “44. इसमें कोई संदेह नहीं है कि अभियोक्ता ने यह तर्क देने की कोशिश की है कि समान डिजाइन बनाने के लिए, प्रतिअभियोक्ता ने 'रिवर्स इंजीनियरिंग' की तकनीक को लागू किया होगा क्योंकि टपरवेयर उत्पादों के साथ

आश्चर्यजनक समानता हो सकती है। यह एक ऐसा मामला है जिसके लिए सबूत की आवश्यकता होगी। साक्ष्य के आधार पर हो सकता है कि अंततः अभियोक्ता यह दिखाने में सफल हो कि उत्पाद चित्र में एक कॉपीराइट है और प्रतिवादियों ने उक्त चित्रों की प्रतिलिपि बनाई है जिससे टपरवेयर उत्पादों के समान अपने स्वयं के उत्पाद बनाने में कॉपीराइट अधिकारों का उल्लंघन होता है। हालांकि, प्रथमदृष्टया, ऐसा लगता है कि एक बार अंतिम उत्पाद डिजाइन बनाने के लिए चित्र बनाए जाने के बाद, उक्त चित्रों में कॉपीराइट का दावा कॉपीराइट अधिनियम के तहत नहीं किया जा सकता है। शायद यही कारण है कि कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 में प्रावधान है कि एक बार डिजाइन अधिनियम के तहत एक डिजाइन पंजीकृत हो जाने के बाद, उसमें कॉपीराइट नहीं रहेगा। किसी भी डिजाइन में ऐसा कॉपीराइट तब भी समाप्त हो जाता है जब किसी भी वस्तु पर जिस पर डिजाइन लागू किया गया है, कॉपीराइट के मालिक द्वारा एक औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा 50 से अधिक बार पुनः प्रस्तुत किया गया हो। अंतर्निहित संदेश यह है कि एक औद्योगिक डिजाइन में कॉपीराइट डिजाइन अधिनियम, 2000 द्वारा नियंत्रित होता है। यदि कोई डिजाइन उस अधिनियम के तहत पंजीकृत है तो यह कॉपीराइट अधिनियम के तहत सुरक्षा के लिए सुपाठ्य नहीं है। ऐसे मामलों में डिजाइन अधिनियम के तहत डिजाइन पंजीकृत होने के बाद, दिया गया संरक्षण कॉपीराइट संरक्षण नहीं है, बल्कि कानून के आधार पर एक सच्चा एकाधिकार है क्योंकि इस तरह के डिजाइन कभी भी सामान्य अधिनियम द्वारा संरक्षित नहीं थे। अपवाद उन मामलों में हो सकता है जहां कलात्मक चित्रों के संबंध में कॉपीराइट अस्तित्व में आया था और बाद में उन चित्रों का उपयोग किसी भी औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा गुणा करने के लिए मॉडल या पैटर्न के रूप में किया गया था। वहाँ, यदि चित्र एक डिजाइन के रूप में पंजीकरण करने में सक्षम हो जाते हैं तो इसके परिणामस्वरूप कॉपीराइट को मजबूत नहीं किया जाएगा [वार्नर ब्रदर्स बनाम रोडरनर, 1988 एफएसआर 292 देखें]। हालाँकि, यदि काम का इच्छित औद्योगिक उपयोग इसके अस्तित्व में आने के साथ समकालीन था, तो कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 लागू होगी। मैं जल्दबाजी में यह स्पष्ट कर सकता हूँ कि यह सुझाव नहीं दिया गया है कि यदि कोई डिजाइन पंजीकृत है, तो किसी भी परिस्थिति में चित्र में कॉपीराइट मौजूद नहीं है। खंड 15 में कहा गया है कि डिजाइन अधिनियम के तहत किसी डिजाइन के पंजीकरण पर, कॉपीराइट उस डिजाइन में नहीं रहेगा न कि ड्राइंग में। इसलिए, यह संभव है कि जब नए आकार का ढाला हुआ प्लास्टिक लेख एक कार्यशील चित्र से बनाया जाता है, जैसा कि तत्काल मामले में होता है, तो चित्र कॉपीराइट

संरक्षण के हकदार एक मूल कार्य के रूप में योग्य हो सकता है और साथ ही, वस्तु के आकार के लिए एक पंजीकृत डिजाइन डिजाइन अधिनियम के तहत संरक्षित किया जाएगा। यदि लेख की एक अनधिकृत प्रति बनाई गई है, तो यह ड्राइंग की एक अप्रत्यक्ष प्रति हो सकती है और इसलिए कॉपीराइट का उल्लंघन हो सकता है।"

[जोर दिया गया]

26. इसी तरह, **मैटेल, इंक बनाम जयंत अग्रवाल**,⁴ में अभियोक्ता मैटेल ने आरोप लगाया कि प्रतिअभियोक्ता ने उनके बोर्ड गेम के डिजाइन की नकल करके और 'स्क्रेबुलस' नामक एक इलेक्ट्रॉनिक गेम बनाकर उनके कॉपीराइट का उल्लंघन किया था। मैटेल ने आगे तर्क दिया कि 1932 से उनके खेल के सभी संस्करण, कॉपीराइट अधिनियम की खंड 2 (सी) के तहत 'कलात्मक कार्यों' के रूप में योग्य हैं और भारत में अंतर्राष्ट्रीय कॉपीराइट आदेश, 1991 के तहत संरक्षित हैं। इसके विपरीत, प्रतिअभियोक्ता ने तर्क दिया कि मैटेल का गेम बोर्ड, एक त्रि-आयामी लेख होने के कारण, कॉपीराइट अधिनियम के तहत संरक्षित नहीं किया जा सकता है और इसे डिजाइन अधिनियम के तहत एक डिजाइन के रूप में पंजीकृत किया जाना चाहिए था। उच्च न्यायालय के एक विद्वान एकल न्यायाधीश ने प्रतिस्पर्धी दावों पर विधिवत विचार करने और **माइक्रोफाइबर I (उपरोक्त)** पर भरोसा करने के बाद, अभियोक्ता को इस आधार पर अंतरिम निषेधाज्ञा देने से इनकार कर दिया कि इसके बोर्ड गेम को इसके वर्णानुक्रम टाइल टुकड़ों के साथ पचास से अधिक बार पुनः प्रस्तुत किया गया था, बिना डिजाइन अधिनियम के तहत कोई पंजीकरण किए।
27. इस बीच, **माइक्रोफाइबर्स I (उपरोक्त)** जिस पर ऐसे कई फैसलों में भरोसा किया जा रहा था, को दिल्ली उच्च न्यायालय की एक खण्ड पीठ के समक्ष **माइक्रोफाइबर्स इंक बनाम गिरधर एंड कंपनी**⁵ के माध्यम से अपील की गई थी, जिसमें तर्क दिया गया था कि यह विषय कॉपीराइट अधिनियम की खंड 2 (सी) के भीतर मूल 'कलात्मक कार्यों' के रूप में योग्य है और जो शुद्ध कलात्मक कार्य हैं और जो नहीं हैं, उनके बीच कोई कृत्रिम अंतर नहीं किया जा सकता है। विशेष रूप से, अपीलकर्ता ने एकल न्यायाधीश के इस निष्कर्ष पर सवाल उठाया कि विचाराधीन कलात्मक कार्य में कला के एक टुकड़े के रूप में खुद को खड़ा करने की योग्यता नहीं थी और इसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था।
28. उच्च न्यायालय की खण्ड पीठ ने इन दलीलों पर विचार करते हुए अपील को खारिज कर दिया और अपने निष्कर्षों को संक्षेप में इस प्रकार प्रस्तुत किया:

"46. हम इस प्रकार अपने निष्कर्षों को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं:-

 - a. 'कलात्मक कार्य' की परिभाषा का एक बहुत व्यापक अर्थ है क्योंकि यह किसी भी कलात्मक गुणवत्ता वाले कार्य की किसी भी सीमा से सीमित नहीं है। यहाँ तक कि एक संक्षिप्त सार कार्य, जैसे कि मनमाने ढंग से खींची गई कुछ

रेखाएँ या वक्र भी एक कलात्मक कार्य के रूप में योग्य होंगे। यह द्वि-आयामी या त्रि-आयामी हो सकता है। कलात्मक कार्य में दृश्य आकर्षण हो भी सकता है और नहीं भी।

b. मूल कलात्मक कृति का धारक जिन अधिकारों का हकदार है, उनकी गणना कॉपीराइट अधिनियम की खंड 14 (सी) में की गई है।

c. यह किसी भी भौतिक रूप में काम को पुनः पेश करने के लिए एक मूल कलात्मक कार्य में कॉपीराइट धारक का अनन्य अधिकार है। उदाहरण के लिए, एक काल्पनिक भविष्यवादी ऑटोमोबाइल का एक चित्र, जो एक मूल कलात्मक कार्य है, को धातु की चादर जैसे तत्व का उपयोग करके त्रि-आयामी सामग्री के रूप में पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है।

d. डिजाइन अधिनियम के तहत पंजीकृत कार्यों के मामले में डिजाइन संरक्षण को औद्योगिक रूप से उत्पादित कार्यों के कॉपीराइट संरक्षण को शामिल करने के लिए नहीं बढ़ाया जा सकता है।

e. कॉपीराइट अधिनियम और डिजाइन अधिनियम और वास्तव में प्रस्तावना और डिजाइन अधिनियम की वस्तुओं और कारणों के विवरण के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि विधायी उद्देश्य चित्रों, मूर्तियों आदि जैसे शुद्ध मूल कलात्मक कार्यों को उच्च सुरक्षा प्रदान करना और डिजाइन गतिविधि को कम सुरक्षा प्रदान करना था जो प्रकृति में वाणिज्यिक है। इस प्रकार, विधायी आशय स्पष्ट है कि वाणिज्यिक प्रकृति के किसी कार्य को दिया गया संरक्षण शुद्ध कला के कार्य को दिए गए संरक्षण से कम है और इसके बराबर नहीं है।

f. मूल पेंटिंग्स/कलात्मक कृतियाँ जिनका उपयोग औद्योगिक रूप से डिज़ाइन किए गए लेख का उत्पादन करने के लिए किया जा सकता है, वे कॉपीराइट अधिनियम, 1957 की खंड 2 (सी) के तहत परिभाषित कलात्मक कार्य के अर्थ के भीतर आते रहेंगे और कॉपीराइट संरक्षण की पूरी अवधि के हकदार होंगे जैसा कि डिज़ाइन अधिनियम की खंड 2 (डी) के तहत डिज़ाइन की परिभाषा से स्पष्ट है। हालाँकि, कलात्मक कार्य के निर्माण का इरादा प्रासंगिक नहीं है।

g. यही कारण है कि विधानमंडल ने न केवल यह अनिवार्य करके संरक्षण को सीमित कर दिया कि कॉपीराइट एक पंजीकृत डिजाइन में कॉपीराइट अधिनियम के तहत समाप्त हो जाएगा, बल्कि इसके अलावा, जैसे ही कॉपीराइट के मालिक या उसके लाइसेंसधारी द्वारा औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा संबंधित डिजाइन को 50 से अधिक बार लागू किया गया था, डिजाइन अधिनियम के तहत पंजीकृत होने में सक्षम डिजाइनों को कॉपीराइट संरक्षण से भी वंचित कर दिया, लेकिन इस तरह से पंजीकृत नहीं किया गया।

h. कला के मूल कार्य में, कॉपीराइट मौजूद होगा और लेखक/धारक मूल कलात्मक कार्य के संबंध में कॉपीराइट अधिनियम के तहत दिए गए लंबे संरक्षण का आनंद लेते रहेंगे।

i. यदि डिजाइन, डिजाइन अधिनियम के तहत पंजीकृत है, तो डिजाइन कॉपीराइट अधिनियम के तहत अपने कॉपीराइट संरक्षण को खो देगा। यदि यह डिजाइन अधिनियम के तहत एक डिजाइन पंजीकृत है, लेकिन ऐसा पंजीकृत नहीं किया गया है, तो डिजाइन को अधिनियम के तहत कॉपीराइट संरक्षण का लाभ तब तक मिलता रहेगा जब तक कि एक औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा किसी वस्तु पर 50 गुना से अधिक के लिए इसके आवेदन की सीमा तक पहुंच जाती है। लेकिन एक बार उस सीमा को पार करने के बाद, यह कॉपीराइट अधिनियम के तहत अपने कॉपीराइट संरक्षण को खो देगा। यह व्याख्या विधायी इरादे के अनुसार कॉपीराइट और डिजाइन अधिनियम को सुसंगत बनाएगी।

47. इस प्रकार, हम इस अपील में कोई योग्यता नहीं पाते हैं और इसे खारिज कर दिया जाता है लेकिन लागत के बारे में कोई आदेश नहीं दिया जाता है।"

[जोर दिया गया]

29. **माइक्रोफाइबर II (उपरोक्त)** में दिल्ली उच्च न्यायालय के दृष्टिकोण को अन्य उच्च न्यायालयों, जैसे कि बॉम्बे उच्च न्यायालय ने भी समर्थन दिया है।

प्रांडा ज्वैलरी प्राइवेट लिमिटेड बनाम आर्या 24 के. टी.,⁶ और केरल उच्च न्यायालय ने **फन वर्ल्ड एंड रिसॉर्ट्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड बनाम निमिल के. के.⁷**

ई. 1.2.1.2 कार्यात्मक उपयोगिता का पहलू

30. 'कार्यात्मक उपयोगिता' के दायरे को पूरी तरह से समझने के लिए, पहले डिजाइन अधिनियम के उद्देश्यों और उद्देश्यों पर पूरी समझ होना अनिवार्य है। इस संबंध में, हम उपयोगी रूप से **भारत ग्लास ट्यूब लिमिटेड बनाम गोपाल ग्लास वर्क्स लिमिटेड**, मामले में इस न्यायालय के एक आदेश का उल्लेख कर सकते हैं जो निम्नानुसार निर्धारित है:⁸

"26. वास्तव में, इस अधिनियम का एकमात्र उद्देश्य दस साल की अवधि के लिए मूल डिजाइन के बौद्धिक संपदा अधिकार की सुरक्षा है या जो भी आगे की अवधि के लिए बढ़ाया जा सकता है। इस अधिनियम के पीछे का उद्देश्य व्यक्ति को उसके शोध और श्रम के लिए लाभान्वित करना है जो उसने नए और मूल डिजाइन को विकसित करने के लिए किया है। इस अधिनियम को लागू करने का एकमात्र उद्देश्य यही है। इसने यह भी निर्धारित किया है कि यदि डिजाइन नया या मूल या पहले प्रकाशित नहीं है तो इस तरह के डिजाइन को पंजीकृत नहीं किया जाना चाहिए। इसमें आगे कहा गया है कि यदि इसे

भारत या किसी अन्य देश में कहीं भी मूल रूप में या उपयोग करके या किसी अन्य तरीके से प्रकाशन द्वारा दाखिल करने की तारीख से पहले या जहां लागू हो, पंजीकरण के लिए आवेदन की प्राथमिकता तिथि से पहले जनता के सामने प्रकट किया गया है, तो ऐसा डिजाइन पंजीकृत नहीं किया जाएगा या यदि यह पाया जाता है कि यह ज्ञात डिजाइन या ज्ञात डिजाइनों के संयोजन से महत्वपूर्ण रूप से अलग नहीं है, तो ऐसे डिजाइन पंजीकृत नहीं किए जाएंगे। इसमें यह भी प्रावधान है कि अधिनियम की खंड 19 के तहत पंजीकरण रद्द किया जा सकता है यदि सक्षम प्राधिकारी यानी नियंत्रक के समक्ष उचित आवेदन दायर किया जाता है कि डिजाइन पहले भारत में पंजीकृत किया गया है या पंजीकरण की तारीख से पहले भारत में या किसी अन्य देश में प्रकाशित किया गया है, या यह कि डिजाइन एक नया या मूल डिजाइन नहीं है या यह कि डिजाइन इस अधिनियम के तहत पंजीकृत नहीं है या यह कि यह खंड 2 के खंड (डी) में परिभाषित डिजाइन नहीं है। दोनों पक्षों को सुनने के बाद नियंत्रक यदि संतुष्ट हो जाता है कि डिजाइन नया या मूल नहीं है या यह पहले से ही पंजीकृत है या यदि यह पंजीकृत करने योग्य नहीं है, तो ऐसे पंजीकरण को रद्द कर दें और उस आदेश के खिलाफ व्यथित हो, तो उच्च न्यायालय में अपील की जाएगी। इन प्रतिबंधों को उस मूल व्यक्ति की रक्षा के लिए उत्कीर्ण किया गया है जिसने लंबे समय तक शोध करके अपने स्वयं के प्रयासों के आधार पर एक नया डिजाइन किया है। पंजीकृत होने पर नया और मूल डिजाइन दस साल की अवधि के लिए होता है। ऐसा मूल डिजाइन जो नया है और जो देश में उपलब्ध नहीं है या जो पहले से पंजीकृत नहीं है या जो पंजीकरण की तारीख से पहले भारत या किसी अन्य देश में प्रकाशित नहीं हुआ है, वह दस साल की अवधि के लिए संरक्षित होगा। इसलिए, यह बौद्धिक संपदा अधिकार के संरक्षण की प्रकृति में है। यह उद्देश्य था जैसा कि उद्देश्यों और कारणों के विवरण और अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों से स्पष्ट है। इस पृष्ठभूमि में, हमें इस बात की जांच करनी होगी कि क्या प्रतिवादी द्वारा दायर आवेदन पर पंजीकृत डिजाइन को अपीलार्थी द्वारा दायर आवेदन के आधार पर रद्द किया जा सकता है या नहीं।

[जोर दिया गया]

31. इस न्यायालय ने आगे स्वीकार किया कि 'डिजाइन' शब्द की अंग्रेजी न्यायालयों द्वारा व्यापक रूप से व्याख्या की गई थी, यह देखते हुए कि अभिव्यक्ति भारतीय संदर्भ में पवित्र परिभाषा के साथ समान सामग्री थी। यह संरक्षण विशेष रूप से प्रासंगिक है क्योंकि अंग्रेजी न्यायशास्त्र ने लंबे समय से यह पता लगाने के लिए 'कार्यात्मक उपयोगिता' परीक्षण का उपयोग किया है कि क्या कोई काम अंग्रेजी कानून के तहत

सुरक्षा का हकदार होगा, विशेष रूप से अंग्रेजी पंजीकृत डिजाइन अधिनियम, 1949 के तहत-एक परीक्षण जिसे बाद में भारत के कुछ उच्च न्यायालयों द्वारा अपनाया गया।

32. डिजाइन के संदर्भ में 'कार्यात्मक उपयोगिता' के प्रश्न को सबसे पहले हाउस ऑफ लॉर्ड्स द्वारा **एम्प बनाम यूटिलक्स** में संबोधित किया गया था, जिसमें पक्षों के बीच विवाद में एकल विद्युत टर्मिनल और कई टर्मिनलों से संबंधित डिजाइनों का उल्लंघन शामिल था।⁹ उसमें विवाद इस बात से संबंधित था कि क्या टर्मिनलों की विशेषताएँ या आकार पूरी तरह से कार्य द्वारा निर्धारित किए गए थे या क्या वे आंख को आकर्षित करते थे। लॉर्ड रीड (अपने और लॉर्ड डोनोवन के लिए) ने कहा कि:

“दृश्य आकर्षण के साथ औद्योगिक दक्षता का मिश्रण होना चाहिए। यदि आकृति आँख को आकर्षित करने के लिए नहीं है, बल्कि केवल वस्तु को काम करने के लिए है, तो यह प्रावधान इसे वैधानिक संरक्षण से बाहर करता है।

गलतफहमी से बचने के लिए मैं यह जोड़ना चाहूंगा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि अधिकांश मामलों में जो अधिनियम डिजाइनर की रक्षा करेगा, उसके डिजाइन की रचना करते समय दृश्य अपील को ध्यान में रखा गया था। लेकिन यह अच्छी तरह से हो सकता है कि एक डिजाइनर जिसने वास्तव में केवल व्यावहारिक दक्षता के बारे में सोचा है, उसने एक ऐसा डिजाइन तैयार किया है जो आंखों को आकर्षित करता है। उन्हें सुरक्षा से वंचित नहीं किया जाएगा क्योंकि जब उन्होंने डिजाइन की रचना की थी तो यह उनका उद्देश्य नहीं था।”

[जोर दिया गया]

33. यह निर्णय 'विशेषताओं' और 'आकृतियों' के बीच डिजाइनों में अंतर करने वाला पहला निर्णय था, जिसे केवल 'विशुद्ध रूप से कार्यात्मक उद्देश्यों' के लिए मौजूद विशेषताओं की तुलना में उपभोक्ता की नजर में 'सौंदर्य की दृष्टि से आकर्षक' माना जाता था। **इंटरलेगो ए. जी. बनाम टाइको इंडस्ट्रीज इंक. और अन्य**¹⁰ में अंग्रेजी पंजीकृत डिजाइन अधिनियम, 1949 की व्याख्या करते हुए कार्यात्मक उपयोगिता पर आधारित इस सीमांकन पर प्रिवी काउंसिल की न्यायिक समिति द्वारा आगे भरोसा किया गया था। अंग्रेजी अदालतों द्वारा विकसित विशेषताओं के आकर्षक होने या केवल कार्यात्मक उपयोगिता के कारण होने के आधार पर इस भेद की रेखा को बाद में भारत के कुछ उच्च न्यायालयों द्वारा नियोजित किया गया है।

34. दिल्ली उच्च न्यायालय ने सबसे पहले **स्मिथक्लाइन बीचम पीएलसी बनाम हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड**,¹¹ में कार्यात्मक उपयोगिता के मुद्दे को संबोधित किया, जहां अभियोक्ता ने प्रतिवादियों को उनका उल्लंघन करने से रोकने के लिए टूथब्रश डिजाइनों पर स्वामित्व की घोषणा की मांग की। एकल न्यायाधीश ने जांच की कि क्या टूथब्रश का 'एस' आकार का डिजाइन मुख्य रूप से कार्यात्मक या सौंदर्यपूर्ण था। कार्यात्मक उपयोगिता परीक्षण को

लागू करते हुए, अदालत ने निर्धारित किया कि जबकि डिजाइन उपभोक्ताओं को कुछ सौंदर्य अपील प्रदान करता है, इसका प्राथमिक उद्देश्य कार्यात्मक था। नतीजतन, उच्च न्यायालय ने प्रतिअभियोक्ता के पक्ष में फैसला सुनाया और अभियोक्ता को डिजाइन संरक्षण से इनकार कर दिया।

35. इसके बाद मद्रास उच्च न्यायालय ने **ट्रैक्टर एंड फार्म इक्विपमेंट लिमिटेड बनाम स्टैंडर्ड कंबाईंस प्राइवेट लिमिटेड**,¹² में कार्यात्मक उपयोगिता परीक्षण लागू किया। स्मिथक्लाइन (उपरोक्त) में पूर्ववर्ती सेट का अनुसरण करता है। इस मामले में कुछ ट्रैक्टर मॉडल, पुर्जों और फिटिंग से संबंधित उल्लंघन और पास ऑफ के आरोप शामिल थे। यह समीक्षा करते हुए कि क्या निचली अदालत शिकायत को खारिज करने में सही थी, उच्च निचली अदालत ने कहा कि इस बारे में गंभीर सवाल बने हुए हैं कि क्या विशिष्ट भाग या आकार कार्यात्मक या सौंदर्यपूर्ण थे। इसके अतिरिक्त, यह निर्धारित करने की आवश्यकता थी कि क्या मूल चित्र डिजाइन अधिनियम या कॉपीराइट अधिनियम के तहत सुरक्षा प्रदान करते हैं। नतीजतन, मद्रास उच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि शिकायत को सीमा पर खारिज नहीं किया जा सकता है। इसके बाद एकल न्यायाधीश के इस निर्णय की पुष्टि मद्रास उच्च न्यायालय की एक खण्ड पीठ ने 2014 में की।¹³
36. **मोहन लाल बनाम सोना पेंट एंड हार्डवेयर**¹⁴ मामले में दिल्ली उच्च न्यायालय की पूर्ण पीठ ने **स्मिथक्लाइन (उपरोक्त)** निर्णय की पुष्टि की। इस मामले में नए और अलग-अलग दर्पण ढांचे के उल्लंघन पर विवाद शामिल था और इस व्यापक कानूनी प्रश्न को संबोधित किया गया कि क्या एक पारित कार्रवाई को डिजाइन अधिनियम के तहत दावे के साथ जोड़ा जा सकता है, हालांकि वर्तमान चर्चा के लिए प्रासंगिक नहीं है।
37. बॉम्बे हाई कोर्ट ने **व्हेलपूल ऑफ इंडिया लिमिटेड बनाम वीडियोकॉन इंडस्ट्रीज लिमिटेड**,¹⁵ में कार्यात्मक उपयोगिता परीक्षण के मानक पर भी टिप्पणी की, जिसमें उसने कहा है कि 'कार्यात्मकता की पहली को इस तथ्य पर ध्यान देकर हल किया जा सकता है कि यह वस्तु की कार्यात्मकता पर कोई प्रभाव नहीं डालेगा, अगर कार्य को किसी अन्य आकार के उपयोग से भी किया जा सकता है'।
38. दिलचस्प बात यह है कि बॉम्बे उच्च न्यायालय ने **फोटोक्विप इंडिया लिमिटेड बनाम दिल्ली फोटो स्टोर**,¹⁶ में कार्यात्मक उपयोगिता के परीक्षण के साथ-साथ कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) की व्याख्या करके एक संयुग्म दृष्टिकोण अपनाया है। प्रतिवादी को कलात्मक कार्यों में उसके कॉपीराइट का उल्लंघन करने से रोकने के लिए एक निषेधाज्ञा के लिए वादी के दावे पर निर्णय लेते हुए, एक विद्वान एकल न्यायाधीश ने संक्षिप्त रूप से कहा कि:

“29. खंड 15 (2) किस बात को संदर्भित करती है? यह केवल एक 'डिजाइन' की बात करता है, न कि एक 'कलात्मक कार्य' की। यह बाद वाले पर लागू नहीं होता है, लेकिन केवल पहले वाले पर लागू होता है। डिजाइन अधिनियम की

खंड 2 (डी) इसे स्पष्ट करती है, क्योंकि यह डिजाइन की परिभाषा से सभी 'कलात्मक कार्य' को बाहर करती है। इसलिए, प्रतिवादियों का तर्क आवश्यक रूप से यह होना चाहिए कि वादी के चित्र बिल्कुल भी कलात्मक कार्य नहीं हैं, बल्कि डिजाइन हैं। इंटरलेगो निर्णय के बाद, श्रीमती न्यायाधीश दलवी ने इंडियाना ग्रेटिंग्स में कहा कि डिजाइन अधिनियम (भले ही वास्तव में पंजीकृत न हो) के तहत पंजीकृत होने के लिए, पूरे लेख के आकार या विन्यास पर विचार किया जाना चाहिए, क्योंकि इसी के लिए एक वाणिज्यिक एकाधिकार की मांग की जाती है। डिजाइन और लेख को, आवश्यक रूप से, समग्र रूप से लिया जाना चाहिए। यदि इसका कोई ऐसा हिस्सा है जो कार्यात्मक है, तो वह डिजाइन की परिभाषा से बाहर है। बहिष्करण का इरादा केवल उस तक फैला हुआ है जिसमें कोई अपील नहीं है, लेकिन विशुद्ध रूप से कार्यात्मक विशेषताओं का वर्णन या चित्रण करता है। यदि ऐसा होता है, तो यह 'डिजाइन' नहीं है। यह तब एक 'कलात्मक कार्य' के रूप में कॉपीराइट का आनंद ले सकता है। कॉपीराइट अधिनियम के तहत इस समावेश को भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जैसा कि खेदजनक रूप से श्री गोवर करते हैं, डिजाइन अधिनियम के उद्देश्यों के लिए 'दृश्य अपील' के सवाल के साथ। इंडियाना ग्रेटिंग्स की तरह, वर्तमान वादी के चित्र कुशल आरेख हैं जो किसी भी तैयार उत्पाद को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं, किसी भी 'दृश्य' या सौंदर्य अपील के तैयार उत्पाद की तो बात ही छोड़िए। वे केवल एक कार्यात्मक उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। इसलिए, वे डिजाइन नहीं हैं।"

[जोर दिया गया]

39. असंगत विचार व्यक्त करने वाले किसी अन्य उच्च न्यायालय या इस न्यायालय के किसी भी निर्णय का हमारे सामने उल्लेख नहीं किया गया है। इस प्रकार हम सुरक्षित रूप से इस आधार पर आगे बढ़ते हैं कि कार्यात्मक उपयोगिता का परीक्षण यह निर्धारित करने के लिए अभिन्न है कि क्या कोई वस्तु या कार्य डिजाइन अधिनियम और इसकी निरंतर प्रासंगिकता के तहत संरक्षण के लिए योग्य है, जैसा कि हाल ही में दिल्ली उच्च न्यायालय ने टी. टी. के. प्रेस्टीज लिमिटेड बनाम. के. सी. एम. उपकरण प्रा. लि. Ltd.¹⁷

E.1.2.2 अमेरिका में अदालतों द्वारा नियोजित कारक

40. डिजाइन संरक्षण के लिए पात्रता निर्धारित करने के लिए 'कार्यात्मक उपयोगिता' का विश्लेषण अमेरिकी न्यायालयों द्वारा स्थापित 'वैचारिक पृथक्करण' मानक के समान है। इस मानक के तहत, अदालतें यह आकलन करती हैं कि क्या किसी लेख के कलात्मक पहलू को उसके उपयोगितावादी या कार्यात्मक घटक से अलग किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण भारतीय उच्च न्यायालयों द्वारा लागू किए गए परीक्षणों के साथ संरेखित

होता है, जो कार्यात्मक या उपयोगितावादी विषय को डिजाइन अधिनियम के तहत संरक्षण से बाहर रखते हैं।

41. जबकि अमेरिकी न्यायशास्त्र कलात्मक कार्यों और डिजाइनों के बीच के अंतर को भारतीय कानून के समान नहीं मानता है, किसी काम के कार्यात्मक पहलुओं को उसकी कलात्मक या सौंदर्य विशेषताओं से अलग करने के लिए उपयोग किए जाने वाले मापदंडों में उल्लेखनीय समानताएं हैं और इस प्रकार निर्णायक रूप से यह निर्धारित करता है कि क्या कोई काम वैधानिक संरक्षण का हकदार है। कलात्मक अभिव्यक्ति को एक उपयोगितावादी लेख से अलग करने के दृष्टिकोण को नियोजित करने वाले ऐसे पहले मामलों में से एक **माज़ेर बनाम स्टीन**¹⁸ था। उस विवाद में अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय ने अर्ध-विशिष्ट चीन से बनी पुरुष और महिला नृत्य आकृतियों की मूर्तियों के लिए प्रतिवादी को दिए गए कॉपीराइट की वैधता की जांच की। अदालत ने फैसला सुनाया कि जबकि कॉपीराइट मालिक दूसरों को टेबल लैंप में मानव आकृतियों की मूर्तियों का उपयोग करने से नहीं रोक सकते हैं, वे अपनी विशिष्ट कॉपीराइट वाली मूर्तियों की सीधी प्रतिलिपि बनाने पर प्रतिबंध लगा सकते हैं।
42. हालांकि **माज़ेर (ऊपर)** में अदालत ने स्पष्ट रूप से 'वैचारिक पृथक्ता' शब्द का उपयोग नहीं किया, लेकिन यह एक उपयोगितावादी लेख से एक कलात्मक अभिव्यक्ति को विभाजित करने की नींव प्रतीत होती थी। वास्तव में, **माज़ेर (ऊपर)** में विकसित कानून की स्थिति को बाद में अमेरिकी कांग्रेस द्वारा कॉपीराइट अधिनियम, 1976 में शामिल किया गया था, जिसमें कहा गया था कि:

“सचित्र, ग्राफिक और मूर्तिकला कार्यों में सूक्ष्म, ग्राफिक और अनुप्रयुक्त कला के द्वि-आयामी और त्रि-आयामी कार्य, तस्वीरें, प्रिंट और कला पुनरुत्पादन, नक्शे, ग्लोब, चार्ट, आरेख, मॉडल और वास्तुकला योजनाओं सहित तकनीकी चित्र शामिल हैं। इस तरह के कार्यों में कलात्मक शिल्प कौशल के कार्य शामिल होंगे, जहां तक उनके रूप का संबंध है, लेकिन उनके यांत्रिक या उपयोगितावादी पहलुओं का नहीं; एक उपयोगी लेख का डिजाइन, जैसा कि परिभाषित किया गया है। इस खंड में, एक सचित्र, ग्राफिक या मूर्तिकला कार्य केवल तभी माना जाएगा जब, और केवल इस हद तक कि, इस तरह के डिजाइन में सचित्र, ग्राफिक या मूर्तिकला की विशेषताएं शामिल हैं जिन्हें लेख के उपयोगितावादी पहलुओं से अलग से पहचाना जा सकता है, और स्वतंत्र रूप से मौजूद रहने में सक्षम हैं।”

“एक 'उपयोगी लेख' एक ऐसा लेख है जिसका एक आंतरिक उपयोगितावादी कार्य है जो केवल लेख के रूप को चित्रित करने या जानकारी देने के लिए नहीं है।

एक लेख जो आम तौर पर एक उपयोगी लेख का हिस्सा होता है, उसे "उपयोगी लेख" माना जाता है।"

[जोर दिया गया]

43. वैधानिक ढांचे में 'वैचारिक पृथक्ता' की धारणा को शामिल करने के साथ, इस अवधारणा के दायरे और विस्तार को परिभाषित करने के लिए निरंतर विकास के एक चरण से गुजरना पड़ा। उदाहरण के लिए, **एस्क्वायर इंक बनाम रिंगर**,¹⁹ में डिस्ट्रिक्ट ऑफ कोलंबिया सर्किट के लिए अपील न्यायालय ने 1976 के अधिनियम की हाउस रिपोर्ट का मूल्यांकन किया और कहा कि 'एक उपयोगितावादी वस्तु का समग्र डिजाइन या विन्यास, भले ही वह सौंदर्य और कार्यात्मक विचारों द्वारा निर्धारित किया गया हो, कॉपीराइट के लिए पात्र नहीं है'।
44. इसके बाद, **कीसेलस्टीन-कॉर्ड बनाम एसेसरीस. बाई पेरल इंक**²⁰ पर निर्णय लेते हुए, द्वितीय सर्किट के लिए अपील न्यायालय ने अर्हता प्राप्त की, कि 'वैचारिक पृथक्करण' का परीक्षण एक उज्ज्वल नियम नहीं है, बल्कि इसमें कुछ हद तक व्यक्तिपरकता शामिल है। इसने एक प्राथमिक-सहायक दृष्टिकोण पेश किया, यह अनुमान लगाते हुए कि 'वैचारिक पृथक्ता' की परीक्षा संतुष्ट होगी यदि किसी डिजाइन की कलात्मक विशेषताएं इसके सहायक उपयोगितावादी कार्य के लिए 'प्राथमिक' हैं। हालांकि, **कैरोल बर्नहार्ट इंक. बनाम इकोनॉमी कवर कॉर्प.**, सेकंड सर्किट ने आगे कहा कि 'वैचारिक पृथक्करण' को पूरा किया जाएगा यदि डिजाइन की कलात्मक विशेषताएं लेख के उपयोगितावादी कार्य के लिए आवश्यक नहीं थीं।²¹
45. इस समय के दौरान, सर्किट अदालतों ने विद्वानों और शिक्षाविदों के कार्यों पर भरोसा किया ताकि निर्णायक रूप से यह कहा जा सके कि औद्योगिक डिजाइन की प्रमुख विशेषता पर विचार करना गैर-सौंदर्य और उपयोगितावादी है। चिंताओं की बात है, कॉपीराइटबिलिटी अंततः इस बात पर निर्भर होनी चाहिए कि काम किस हद तक कार्यात्मक विचारों द्वारा बिना किसी बाधा के कलात्मक अभिव्यक्ति को दर्शाता है।²² यह भी निर्धारित किया गया था कि 'व्यावहारिक कला' में अनन्य अधिकारों को संरक्षित करते हुए औद्योगिक डिजाइन के सामान्य क्षेत्र को बाहर करने के लिए इस संबंध में एक प्रत्यक्ष मूल्यांकन किए जाने की आवश्यकता है।
46. यह कहने के बाद, पांचवें सर्किट ने एक अनूठा दृष्टिकोण अपनाने की मांग की और 'विपणन क्षमता दृष्टिकोण की संभावना' का पालन किया, जिसमें वैचारिक पृथक्ता मौजूद होगी यदि इस बात की पर्याप्त संभावना है कि भले ही लेख का कोई उपयोग न हो, फिर भी यह केवल अपने सौंदर्य गुणों के कारण समुदाय के कुछ महत्वपूर्ण वर्ग के लिए विपणन योग्य होगा।²³ इस प्रकार ऐसा लगता है कि एक समय था जब उपयोगी लेखों की कॉपीराइट क्षमता निर्धारित करने के लिए अमेरिकी न्यायालयों द्वारा कई परीक्षण लागू किए गए थे।

47. अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय ने अंततः 2017 में इन विसंगतियों का समाधान किया, स्टार एथलेटिका एल. एल. सी. बनाम वर्सिटी ब्रांड्स इंक,²⁴ के माध्यम से एक उपयोगी लेख के डिजाइन में शामिल सुविधाओं की सुरक्षा के लिए एक स्पष्ट परीक्षण स्थापित किया। इसने अभिनिर्धारित किया कि प्रतिलिप्याधिकार संरक्षण के लिए पात्र होने के लिए, सुविधा को निम्नलिखित करना होगा: (i) उपयोगी लेख से अलग कला के दो या त्रि-आयामी काम के रूप में माना जाएगा; और (ii) यह एक संरक्षित चित्रात्मक, ग्राफिक या मूर्तिकला के रूप में योग्य होगा, या तो अपने आप में या किसी अन्य मूर्त माध्यम या अभिव्यक्ति में तय किया गया है, अगर इसकी कल्पना उस उपयोगी लेख से अलग की गई थी जिसमें इसे शामिल किया गया है। इन मापदंडों को निर्धारित करते हुए, स्टार एथलेटिका (उपरोक्त) ने 'भौतिक' और 'वैचारिक पृथक्करण' के बीच बनाए गए अंतर को भी छोड़ दिया, जिसे कुछ अदालतों द्वारा कॉपीराइट ढांचे के विधायी इतिहास के आधार पर अपनाया गया था। अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय ने इस प्रकार स्वयंसिद्ध रूप से व्याख्या में विभिन्न विसंगतियों का मिलान किया और 'वैचारिक पृथक्करण' के विश्लेषण के लिए एक समान मानक स्थापित किया।

E.1.2.3 व्यापक अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांत

48. 'डिजाइन' और 'कलात्मक कार्यों' के बीच ओवरलैप को निश्चित रूप से संबोधित करने के हमारे प्रयास में, हम पहले ही भारत के साथ-साथ अमेरिका में अदालतों द्वारा उनके व्यवहार का पता लगा चुके हैं। इस प्रवास के लिए, हम इन पहलुओं को विनियमित करने वाले व्यापक अंतर्राष्ट्रीय सिद्धांतों और ढांचे का पता लगाना भी आवश्यक समझते हैं।
49. सार्वजनिक अंतर्राष्ट्रीय कानून ने राज्यों के बीच आईपी अधिकारों के लिए न्यूनतम मानकों को स्थापित करने और लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस संबंध में सबसे पहला बहुपक्षीय समझौता औद्योगिक संपत्ति के संरक्षण के लिए पेरिस समझौता, 1883 (पेरिस समझौता)²⁵ था। हालांकि, जबकि पेरिस कन्वेंशन के अनुच्छेद 5 में सदस्यों को औद्योगिक डिजाइनों के लिए सुरक्षा का एक मानक स्थापित करने की आवश्यकता है, यह स्पष्ट रूप से कॉपीराइट शासन के साथ डिजाइन संरक्षण के सामंजस्य के संदर्भ में कोई मार्गदर्शन प्रदान नहीं करता है।
50. इसके बाद, साहित्यिक और कलात्मक कार्यों के संरक्षण के लिए बर्न कन्वेंशन, 1886 (बर्न कन्वेंशन) की स्थापना कई क्षेत्राधिकारों में 'साहित्यिक और कलात्मक कार्यों' के संरक्षण के लिए कानूनी सिद्धांत निर्धारित करने के लिए की गई थी।²⁶ जबकि औद्योगिक डिजाइनों का उल्लेख इस व्यापक वर्गीकरण के भीतर किया गया है, बर्न कन्वेंशन मुख्य रूप से राज्यों को अपने घरेलू कानूनों द्वारा से ऐसे डिजाइनों के लिए सुई जेनरिस संरक्षण विकसित करने की अनुमति देता है। विशेष रूप से, यह डिजाइन

संरक्षण और कॉपीराइट के बीच ओवरलैप पर विस्तार से नहीं बताता है, इस मामले को बड़े पैमाने पर नगरपालिका के कानून पर छोड़ देता है।

51. हालाँकि, बौद्धिक संपदा अधिकारों पर बहुपक्षीय संधियों के क्षेत्र में सबसे बड़ा विकास बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार संबंधी पहलुओं पर समझौता, 1995 (ट्रिप्स)²⁷ को अपनाने के साथ हुआ। पेरिस कन्वेंशन या बर्न कन्वेंशन की तुलना में, ट्रिप्स कहीं अधिक व्यापक तरीके से 'औद्योगिक डिजाइन' पर चर्चा करता है। ट्रिप्स के अनुच्छेद 25 और 26 में माना गया है कि सदस्य उन डिजाइनों को बाहर करने के लिए 'कार्यात्मक उपयोगिता' के परीक्षण का उपयोग कर सकते हैं जो तकनीकी या मौलिक विचार पर निर्मित हैं और जिनके लिए 10 साल की न्यूनतम सुरक्षा अवधि की आवश्यकता होती है, एक प्रावधान जो भारत में डिजाइन अधिनियम में भी परिलक्षित होता है।
52. ट्रिप्स के प्रासंगिक प्रावधानों पर निम्नानुसार प्रकाश डाला गया है:

“अनुच्छेद 25-संरक्षण की आवश्यकताएँ:-

1. सदस्य स्वतंत्र रूप से बनाए गए औद्योगिक डिजाइनों की सुरक्षा के लिए प्रावधान करेंगे जो नए या मूल हैं। सदस्य यह प्रदान कर सकते हैं कि डिजाइन नए या मूल नहीं हैं यदि वे ज्ञात डिजाइनों या ज्ञात डिजाइन विशेषताओं के संयोजन से महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं हैं। सदस्य यह प्रावधान कर सकते हैं कि इस तरह की सुरक्षा का विस्तार तकनीकी या कार्यात्मक विचारों द्वारा अनिवार्य रूप से निर्धारित डिजाइनों तक नहीं होगा।

2. प्रत्येक सदस्य यह सुनिश्चित करेगा कि कपड़ा डिजाइनों के लिए सुरक्षा प्राप्त करने की आवश्यकताएं, विशेष रूप से किसी भी लागत, परीक्षा या प्रकाशन के संबंध में, इस तरह की सुरक्षा प्राप्त करने के अवसर को अनुचित रूप से बाधित नहीं करती हैं। सदस्य औद्योगिक डिजाइन कानून या कॉपीराइट कानून द्वारा से इस दायित्व को पूरा करने के लिए स्वतंत्र होंगे।

अनुच्छेद 26- संरक्षण:

1. एक संरक्षित औद्योगिक डिजाइन के मालिक को यह अधिकार होगा कि जब ऐसे कार्य वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए किए जाते हैं, तो वह मालिक की सहमति नहीं रखने वाले तीसरे पक्ष को ऐसी डिजाइन वाली वस्तुओं को बनाने, बेचने या आयात करने से रोक सकता है, जो संरक्षित डिजाइन की एक प्रति या काफी हद तक एक प्रति हैं।

2. सदस्य औद्योगिक डिजाइनों के संरक्षण के लिए सीमित अपवाद प्रदान कर सकते हैं, बशर्ते कि ऐसे अपवाद संरक्षित औद्योगिक डिजाइनों के सामान्य दोहन के साथ अनुचित रूप से संघर्ष न करें और तीसरे पक्ष के वैध हितों को ध्यान में रखते हुए संरक्षित डिजाइन के मालिक के वैध हितों को अनुचित रूप से पूर्वाग्रहित न करें।

3. उपलब्ध सुरक्षा की अवधि कम से कम 10 वर्ष की होगी।"

[जोर दिया गया]

53. संक्षेप में, जबकि पेरिस सम्मेलन, बर्न सम्मेलन और ट्रिप्स जैसी अंतर्राष्ट्रीय संधियों ने आईपी सुरक्षा को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लेकिन वे 'डिजाइन' और 'कॉपीराइट' संरक्षण के बीच अधिव्यापन को हल करने के लिए एक एकीकृत ढांचे को स्पष्ट रूप से संबोधित नहीं करते हैं। इसके बजाय, वे व्यक्तिगत क्षेत्राधिकारों को अपने स्वयं के दृष्टिकोण तैयार करने की अनुमति देते हैं। ट्रिप्स, विशेष रूप से, सुरक्षात्मक डिजाइनों को अलग करने में 'कार्यात्मक उपयोगिता' की भूमिका को स्वीकार करता है, जिससे घरेलू स्तर पर एक सूक्ष्म दृष्टिकोण की आवश्यकता को मजबूत किया जाता है। नतीजतन, डिजाइन और कॉपीराइट संरक्षण का सामंजस्य काफी हद तक राष्ट्रीय विधायी नीति का विषय बना हुआ है।

E.1.3. पहली का अंतिम टुकड़ा- अपनाया जाने वाला दृष्टिकोण

54. विभिन्न क्षेत्राधिकारों में अपनाए गए स्तर और उन्हें प्रभावित करने वाले प्रमुख विचारों को पार करने के बाद, हम सुरंग के अंत में प्रकाश देखते हैं और हमारे मौजूदा आईपी अधिकार ढांचे के साथ संरेखित होने वाले अपने स्वयं के निश्चित मापदंडों की रूपरेखा तैयार करना उचित समझते हैं।
55. कॉपीराइट अधिनियम की खंड 2 (सी) के तहत 'कलात्मक कार्य' अभिव्यक्ति का बहुत व्यापक अर्थ है और इसमें संक्षिप्त सार कार्य भी शामिल हो सकते हैं जिसमें मनमाने ढंग से खींची गई कुछ रेखाएं या वक्र शामिल हो सकते हैं, जो या तो दो या त्रि-आयामी हो सकते हैं। यह स्पष्ट किया जा सकता है कि इस तरह के काम में कोई दृश्य अपील हो भी सकती है और नहीं भी। इसके अलावा, इस तरह के कलात्मक कार्य का धारक कॉपीराइट अधिनियम की खंड 14 (सी) के तहत संरक्षण प्राप्त करने का हकदार है, जिसमें किसी भी भौतिक रूप में इस तरह के काम को पुनः पेश करने का विशेष अधिकार भी शामिल है। इस तरह के प्रजनन में द्वि-आयामी कार्य के त्रि-आयामी कार्य का चित्रण भी शामिल हो सकता है या इसके विपरीत भी।
56. हालांकि, यदि ऐसा प्रजनन एक औद्योगिक प्रक्रिया को नियोजित करके किया जाता है, जो मैनुअल, मैकेनिकल या रासायनिक हो सकती है, और जिसके परिणामस्वरूप एक तैयार वस्तु होती है जो आंखों को आकर्षित कर सकती है, तो 'ऐसी औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा वस्तु पर लागू रेखाओं या रंगों के आकार, विन्यास, पैटर्न, आभूषण या संरचना की विशेषताएं', डिजाइन अधिनियम की खंड 2 (डी) के अर्थ के भीतर 'डिजाइन' का गठन करती हैं।
57. इस प्रकार ऐसा लगता है कि एक मूल कलात्मक कृति के निर्माण का इरादा कॉपीराइट या डिजाइन व्यवस्था के तहत इसके संरक्षण का निर्धारण नहीं करता है। बल्कि, विधायी इरादा दोनों कानूनों को सुसंगत बनाना है ताकि एक 'कलात्मक कार्य' कॉपीराइट संरक्षण

के लिए योग्य हो, लेकिन इसका वाणिज्यिक या औद्योगिक अनुप्रयोग-यानी औद्योगिक उत्पादन के लिए मूल कार्य से प्राप्त 'डिजाइन'-कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) में निर्धारित सीमाओं के अधीन हो। इस तरह का डिजाइन तभी संरक्षित होता है जब यह डिजाइन अधिनियम के तहत पंजीकृत होता है।

58. इसे और सरल बनाने के लिए, मूल कलात्मक कार्य, जिसे शुरू में कॉपीराइट संरक्षण प्राप्त है, केवल इसलिए नहीं खोता है क्योंकि इससे प्राप्त एक 'डिजाइन' को एक उत्पाद बनाने के लिए औद्योगिक रूप से लागू किया गया है। जबकि अभिव्यक्ति 'कलात्मक कार्य' का एक व्यापक वर्णक्रम है, 'डिजाइन' विशिष्ट विशेषताओं जैसे आकार, विन्यास, पैटर्न, अलंकरण, या रेखाओं या रंगों की संरचना तक सीमित है, जिसे एक औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा से एक वस्तु पर लागू किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप एक तैयार उत्पाद होता है जो आंखों को आकर्षित करता है। ये दृश्य रूप से आकर्षक विशेषताएं, जब औद्योगिक रूप से लागू की जाती हैं, तो डिजाइन अधिनियम के तहत एक 'डिजाइन' को परिभाषित करती हैं।
59. हमारे विश्लेषण से आगे पता चलता है कि जांच को केवल यह मानकर समाप्त नहीं किया जा सकता है कि जो कॉपीराइट अधिनियम के अर्थ के भीतर एक 'कलात्मक कार्य' के रूप में योग्य नहीं है, वह स्वचालित रूप से डिजाइन अधिनियम के तहत सुरक्षा प्राप्त करेगा। जबकि डिजाइन अधिनियम के तहत संरक्षण उतना स्थायी नहीं है जितना कि कॉपीराइट अधिनियम के तहत है, यह डिफॉल्ट रूप से प्रदान नहीं किया जाता है और विशिष्ट मानदंडों को पूरा करने की आवश्यकता होती है। इस संबंध में, भारत और विश्व स्तर पर अदालतों यह निर्धारित करने के लिए 'कार्यात्मक उपयोगिता' के परीक्षण को लगातार लागू करती हैं कि क्या कोई काम डिजाइन अधिनियम के तहत संरक्षण के लिए योग्य है या नहीं।
60. इसलिए भारत में अदालतों द्वारा पहले से ही अपनाए गए दृष्टिकोण का समर्थन करना उचित होगा, क्योंकि यह न केवल अमेरिकी अदालतों द्वारा नियोजित सर्वोत्तम प्रथाओं और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में निहित सिद्धांतों का अनुकरण करता है, बल्कि यह समकालीन कानूनों और विधानों पर भी उचित विचार करता है। इस प्रकार हमने कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) के कारण उत्पन्न पहली को दूर आदेश के लिए एक दो-आयामी दृष्टिकोण तैयार किया है ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या कोई काम डिजाइन अधिनियम द्वारा संरक्षित होने के योग्य है। इस परीक्षण में निम्नलिखित पर विचार किया जाएगा: (i) क्या विचाराधीन कार्य विशुद्ध रूप से एक 'कलात्मक कार्य' है जो कॉपीराइट अधिनियम के तहत संरक्षण का हकदार है या क्या यह ऐसे मूल कलात्मक कार्य से व्युत्पन्न एक 'डिजाइन' है और कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) में भाषा पर आधारित एक औद्योगिक प्रक्रिया के अधीन है; (ii) यदि ऐसा कार्य कॉपीराइट संरक्षण के लिए योग्य नहीं है, तो 'कार्यात्मक उपयोगिता' का परीक्षण लागू

करना होगा ताकि इसके प्रमुख उद्देश्य को निर्धारित किया जा सके, और फिर यह पता लगाया जा सके कि क्या यह डिजाइन अधिनियम के तहत डिजाइन संरक्षण के लिए योग्य होगा।

61. इस परीक्षण को लागू करते समय न्यायालयों को वैधानिक प्रावधानों, न्यायिक पूर्व निर्णय और तुलनात्मक न्यायशास्त्र द्वारा निर्देशित एक मामले-विशिष्ट जांच करनी चाहिए। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि व्यापक उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी शासन के तहत दिए गए अधिकार दूसरे के क्षेत्र में अनुचित अतिक्रमण किए बिना अपने इच्छित उद्देश्य को पूरा करें। इस दृष्टिकोण के साथ, हमने 'कॉपीराइट' और 'डिजाइन' कानून (ओं) के प्रतिच्छेदन पर कार्यों के व्यवहार को स्पष्ट करने का प्रयास किया है, जिससे भारत में आईपी अधिकारों के अनुप्रयोग में सुसंगतता और निरंतरता सुनिश्चित होती है।
62. हम जल्दबाजी में यह जोड़ते हैं कि इस न्यायालय ने कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) से उत्पन्न होने वाली कथित जटिलताओं को स्पष्ट करने का कार्य शुरू किया है। इस संदर्भ में, हम हमारे सामाजिक-कानूनी ढांचे के अनुरूप सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने में देश भर के उच्च न्यायालयों के प्रयासों की सराहना करते हैं। उम्मीद है कि हमारे विश्लेषण और परीक्षण ने भविष्य में किसी भी अस्पष्टता को रोकने के लिए इस कानूनी मुद्दे को हल कर दिया है।

ई. 2 अंक संख्या 2: उच्च न्यायालय द्वारा सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत आवेदन की अस्वीकृति ---

63. हाथ में मामले को स्वीकार करते हुए, पक्षों के बीच प्राथमिक विवाद इस बात में निहित है कि क्या उच्च न्यायालय ने वाणिज्यिक न्यायालय के आदेश को दरकिनार करने में गलती की है या नहीं, जिसके तहत उसने सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत एल. एन. जी. एक्सप्रेस द्वारा दिए गए आवेदन की अनुमति दी थी।
64. वाणिज्यिक न्यायालय ने एल. एन. जी. एक्सप्रेस के आवेदन को इस आधार पर अनुमति दी कि 'प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग्स' डिजाइन अधिनियम की खंड 2 (डी) के तहत 'डिजाइन' के रूप में योग्य है, और इसलिए, आईनॉक्स के पक्ष में कॉपीराइट उल्लंघन के लिए कोई मुकदमा नहीं चलाया जा सकता है।
65. हालाँकि, उच्च न्यायालय ने वाणिज्यिक न्यायालय के निष्कर्ष से असहमति जताते हुए, शुरू में मामले को पुनर्विचार के लिए भेज दिया। जब वाणिज्यिक न्यायालय ने अपने पहले के निष्कर्ष को दोहराया, तो उच्च न्यायालय ने फिर से हस्तक्षेप किया और एल. एन. जी. एक्सप्रेस के आवेदन को खारिज कर दिया, जिसमें वाणिज्यिक न्यायालय को सी. पी. सी. के आदेश XXXIX नियम 1 और 2 के तहत अंतरिम निषेधाज्ञा के लिए आईनॉक्स की याचिका पर विचार करने का निर्देश दिया गया।

66. उच्च न्यायालय और वाणिज्यिक न्यायालय के बीच इस लंबे उतार-चढ़ाव ने पक्षों को हमारे सामने लाया है। विवादित निर्णय के गहन विश्लेषण पर, हम पाते हैं कि उच्च न्यायालय ने निम्नलिखित व्यापक कारणों से अपने निष्कर्षों की पुष्टि की है:

- (a) कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15(1) तब लागू होती है जब कोई डिज़ाइन डिज़ाइन अधिनियम के तहत पंजीकृत होता है, जिससे कॉपीराइट संरक्षण के किसी भी दावे को निहित रूप से प्रतिबंधित किया जाता है। हालांकि, कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15(2) में यह निर्धारित करने के लिए एक जांच की आवश्यकता है कि क्या विचाराधीन ड्राइंग डिज़ाइन अधिनियम के दायरे में आती है। इस आवश्यक जांच का तात्पर्य है कि सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के खंड (डी) के तहत एक मुकदमे को पूरी तरह से मुकदमा में दिए गए कथनों को पढ़ने के आधार पर खारिज नहीं किया जा सकता है।
- (b) मूल विवाद इस बात के इर्द-गिर्द घूमता है कि क्या 'प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग्स' कॉपीराइट अधिनियम की खंड 2 (सी) के तहत ड्राइंग के रूप में योग्य हैं या क्या वे डिज़ाइन अधिनियम की खंड 2 (डी) के तहत 'डिज़ाइन' की परिभाषा के भीतर आते हैं, जिससे एक विस्तृत परीक्षा की आवश्यकता होती है।
- (c) **माइक्रोफाइबर II (उपरोक्त)** मामले में दिल्ली उच्च न्यायालय की खण्ड पीठ ने निर्धारित किया है कि 'कलात्मक कार्य' शब्द का एक व्यापक दायरा है और यह स्वतंत्र रूप से या किसी डिज़ाइन के अग्रदूत के रूप में मौजूद हो सकता है। इसके अतिरिक्त, एक कलात्मक कार्य से प्राप्त एक डिज़ाइन कॉपीराइट संरक्षण का आनंद ले सकता है, जो कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) में निर्धारित सीमा से परे औद्योगिक रूप से लागू होने के बाद बंद हो जाता है। इन जटिल अंतरों को देखते हुए, एक अधिक विस्तृत विश्लेषण आवश्यक है, और इस तरह के निर्धारण बहुत हद तक नहीं किए जा सकते हैं।
- (d) भले ही विचाराधीन चित्र को एक मूल कलात्मक कार्य के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है, यह स्वचालित रूप से डिज़ाइन अधिनियम के तहत संरक्षण के लिए योग्य नहीं है। ऐसे मामलों में, यह मूल्यांकन किया जाना चाहिए कि क्या डिज़ाइन का प्रमुख पहलू कार्यात्मक है या क्या डिज़ाइन डिज़ाइन अधिनियम के तहत पंजीकृत है, जिसका अर्थ है कि जब एक औद्योगिक प्रक्रिया द्वारा से किसी वस्तु पर लागू किया जाता है, तो तैयार उत्पाद में विशुद्ध रूप से कार्यात्मक होने के बजाय सौंदर्य अपील होनी चाहिए।
- (e) कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15(2) अधिनियम के तहत कलात्मक कार्यों को दिए गए संरक्षण पर एक सीमा के रूप में कार्य करती है। आईनॉक्स के दावे की अनुमति देने से एक व्यापक प्रभाव हो सकता है, जो संभावित रूप से प्रत्येक अनुरेखण या चित्र को कॉपीराइट संरक्षण प्राप्त करने की अनुमति देता है, जबकि

साथ ही एक लेख पर इसके आवेदन द्वारा से औद्योगिक या व्यावसायिक रूप से शोषण किया जा रहा है। इस तरह का परिणाम संभवतः विधानमंडल के इरादे का उल्लंघन करेगा।

- (f) अंततः, यह निर्धारित करना कि क्या आंतरिक पोत का 'प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग्स', जो कि कॉपीराइट अधिनियम की खंड 2 (सी) के तहत एक 'मूल कलात्मक कार्य' है, कॉपीराइट संरक्षण का आनंद ले रहा है या क्या इस तरह के संरक्षण को उनके औद्योगिक अनुप्रयोग के कारण कॉपीराइट अधिनियम की खंड 15 (2) द्वारा कम किया गया है, कानून और तथ्य का एक महत्वपूर्ण मिश्रित प्रश्न है।
- (g) सी. पी. सी. का आदेश VII नियम 11(ए) एक अदालत को एक शिकायत को अस्वीकार करने का अधिकार देता है यदि अभियोक्ता वाद हेतुक कारण का खुलासा करने में विफल रहता है। इसका निर्धारण करने में, अदालत को जटिल कानूनी प्रश्नों में तल्लीन होने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन केवल यह आकलन करना चाहिए कि क्या आरोप, यदि सही माने जाते हैं, तो सफलता की संभावना का मूल्यांकन किए बिना वाद हेतुक स्थापित करते हैं। चूंकि अभियोक्ता ने स्पष्ट रूप से 'प्रोपराइटरी इंजीनियरिंग ड्राइंग्स'; क्रायोजेनिक ट्रेलरों के आंतरिक भागों से जुड़े साहित्यिक कार्य; और उनके निर्माण या असेंबली के लिए जानकारी पर कॉपीराइट संरक्षण की मांग की थी, इसलिए शिकायत की अस्वीकृति अनुचित थी।
- (h) यह निर्धारित करते समय कि क्या कोई शिकायत वाद हेतुक कारण का खुलासा करती है, अदालत को जटिल कानूनी या तथ्यात्मक मुद्दों की विस्तृत जांच करने की आवश्यकता नहीं है। अदालत की भूमिका इस बात का आकलन करने तक सीमित है कि क्या कोई भी आरोप वाद हेतुक कारण का संकेत देता है। जब तक दावा वाद हेतुक प्रस्तुत करता है या न्यायिक निर्धारण के लिए उपयुक्त सवाल उठाता है, तब तक यह तथ्य कि मामला कमजोर हो सकता है या सफल होने की संभावना नहीं है, इसे खारिज करने का एक वैध कारण नहीं है। अभियोग को अस्वीकार करने के लिए, यह मूल्यांकन करना अनावश्यक है कि क्या अभिकथन प्रतिवादी द्वारा किए गए स्वामित्व दावे की पुष्टि करते हैं। इसी तरह, यदि प्रतिवादी लिखित बयान में कोई कानूनी मुद्दा उठाता है, तो इसे सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत एक आवेदन द्वारा से निर्णय नहीं दिया जा सकता है, क्योंकि ऐसा करना मामले को पूर्व-निर्णय देने के बराबर होगा।
- (i) किसी भी स्थिति में, मुकदमा में 'साहित्यिक कार्य', गोपनीय जानकारी और जानकारी से संबंधित अतिरिक्त दावे शामिल हैं, जिन्हें आंशिक रूप से खारिज नहीं किया जा सकता है। भले ही कॉपीराइट उल्लंघन के दावे को असमर्थनीय माना जाता है, फिर भी दावा किए गए अन्य अधिकारों के संबंध में मुकदमा बनाए रखने

योग्य होगा। नतीजतन, पूरे मुकदमा को मुकदमा के लिए आगे बढ़ना चाहिए, क्योंकि एक शिकायत को आंशिक रूप से खारिज नहीं किया जा सकता है।

67. हम उच्च न्यायालय के इस तर्क से पूरी तरह सहमत हैं कि सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत एक आवेदन पर निर्णय लेते समय इस सवाल का जवाब नहीं दिया जा सकता है कि क्या मूल कलात्मक कृति डिजाइन अधिनियम के तहत 'डिजाइन' के अर्थ के भीतर आएगी। इस चरण में शिकायत में वाद हेतुक प्रकटीकरण के रूप में केवल प्रथमदृष्टया जांच शामिल होगी। 'प्रोपराइटी इंजीनियरिंग ड्राइंग्स' की वास्तविक प्रकृति का पता लगाने से संबंधित प्रश्न में कानून और तथ्य का एक मिश्रित प्रश्न शामिल है और वाणिज्यिक न्यायालय द्वारा प्रारंभिक चरण में वाद कथनों के इस तरह के आकस्मिक मूल्यांकन के आधार पर निर्णय नहीं लिया जा सकता था।
68. इसलिए हम उच्च न्यायालय से सहमत हैं कि इस मामले में शामिल विचारणीय मुद्दों को देखते हुए मुकदमा चलाया जाना चाहिए। वाणिज्यिक न्यायालय, अर्थात् आईनॉक्स के समक्ष अभियोक्ता, वाणिज्यिक न्यायालय द्वारा की गई गलत धारणाओं के कारण गलत तरीके से गैर-उपयुक्त था, जिसने वाद को गलत तरीके से पढ़ा, कानूनी सिद्धांतों को गलत तरीके से लागू किया और 'कलात्मक कार्य' और 'डिजाइन' के बीच के अंतर की अनदेखी की।'
69. प्रासंगिक पूर्व निर्णय और कानूनी स्थितियों पर हमारी चर्चा और हमने जो स्पष्ट परीक्षण रेखांकित किया है, उसके आलोक में हम वाणिज्यिक न्यायालय को इस मुद्दे पर नए सिरे से विचार करने और 'प्रोपराइटी इंजीनियरिंग ड्राइंग्स' की वास्तविक प्रकृति का पता लगाने के लिए ओकैम के रेजर दृष्टिकोण को अपनाकर मुकदमा चलाने का निर्देश देते हैं। इसके अतिरिक्त, वाणिज्यिक न्यायालय को साहित्यिक कृतियों के उल्लंघन, गोपनीय जानकारी, जानकारी आदि से संबंधित दावों का स्वतंत्र रूप से आकलन करने की भी आवश्यकता होगी ताकि मामले को व्यापक रूप से हल किया जा सके।

एफ. निष्कर्ष और दिशा-निर्देश

70. इस प्रकार आईपी कानून की अनिश्चितताओं और दो स्वतंत्र विधानों, अर्थात् डिजाइन अधिनियम और कॉपीराइट अधिनियम के बीच मौजूद आंतरिक तालमेल की जांच करने के बाद, हम निम्नलिखित निष्कर्षों और निर्देशों के साथ तत्काल अपीलों को खारिज करते हैं:-
- सी. पी. सी. के आदेश VII नियम 11 के तहत आवेदन को खारिज करने वाले उच्च न्यायालय के फैसले को बरकरार रखा गया है।
 - वाणिज्यिक न्यायालय को दो महीने की अवधि के भीतर आईनॉक्स द्वारा पसंद किए गए अंतरिम निषेधाज्ञा की मांग करने वाले लंबित आवेदन पर अपना निर्णय देने का निर्देश दिया जाता है।

iii. वाणिज्यिक न्यायालय को आगे इस निर्णय के पैराग्राफ 60 में निर्धारित परीक्षण के आधार पर मालिकाना इंजीनियरिंग ड्राइंग की वास्तविक प्रकृति का परीक्षण करने और एक वर्ष की अवधि के भीतर आईनॉक्स द्वारा दावा किए गए अन्य संबंधित आईपी अधिकार उल्लंघन का पता लगाने का निर्देश दिया जाता है, यह देखते हुए कि उसने पहले ही इस मुद्दे पर महत्वपूर्ण न्यायिक समय बर्बाद कर दिया है।

71. तदनुसार आदेश दिया। लंबित आवेदन, यदि कोई हैं, तो भी उपरोक्त शर्तों में निपटाए जाते हैं।

मामले का परिणाम: याचिकाएं खारिज कर दी गईं।

[†]मुख्यबिंदु तैयार किए गए: अंकित ज्ञान

-
- 1 (2024) एससीसी ऑनलाइन एससी 3844
 - 2 2006 एससीसी ऑनलाइन डेल 60
 - 3 2007 एस. सी. सी. ऑनलाइन डेल 892
 - 4 2008 एससीसी ऑनलाइन डेल 1059
 - 5 2009 एस. सी. सी. ऑनलाइन डेल 1647
 - 6 2015 एस. सी. सी. ऑनलाइन बम 958
 - 7 2020 एस. सी. सी. ऑनलाइन केर 219
 - 8 (2008) 10 एससीसी 657
 - 9 [1972] आरपीसी 103
 - 10 [1988] यूकेपीसी 3
 - 11 1999 एस. सी. सी. ऑनलाइन डेल 965
 - 12 2012 एस. सी. सी. ऑनलाइन मैड 5470
 - 13 स्टैंडर्ड कॉर्पोरेशन इंडिया लिमिटेड बनाम ट्रेक्टर्स एंड फार्म इक्विपमेंट लिमिटेड, 2014 एस. सी. सी. ऑनलाइन मैड 850
 - 14 2013 एस. सी. सी. ऑनलाइन डेल 1980
 - 15 2014 एस. सी. सी. ऑनलाइन बम 565
 - 16 2014 एस. सी. सी. ऑनलाइन बम 1088
 - 17 2023 एससीसी ऑनलाइन डेल 2129
 - 18 माजर बनाम स्टीन, 347 यू. एस. 201,74 एस. सी. टी. 460,98 एल. एड. 630 (1954)
 - 19 एस्क्वायर, इंक. बनाम रिंगर, 591 एफ. 2डी 796 (डी. सी. Cir.1978)।
 - 20 कीसेलस्टीन-कॉर्ड बनाम पर्ल, इंक. द्वारा सहायक उपकरण, 632 एफ. 2डी 989 (2डी Cir.1980)।

- 21 कैरोल बर्नहार्ट इंक. बनामइकोनॉमी कवर कार्पोरेशन।, 773 एफ. 2डी 411 (2डी Cir.1985)।
- 22 ब्रैंडर इंटरनेशनल, इंक. बनामकैस्केड पैसिफिक लम्बर कं., 834 एफ. 2डी 1142 (2डी Cir.1987); पिवट प्वाइंट इंटरनेशनल, इंक. बनाम। चार्लीन प्रोड्स।, इंक., 372 एफ. 3डी 913 (7वां Cir.2004)।
- 23 गैलियानो बनाम हाराह की संचालन कंपनी, 416 एफ. 3डी 411,419 (5वां Cir.2005)।
- 24 स्टार एथलेटिका, एल. एल. सी. बनाम.वर्सिटी ब्रांड्स, इंक., 137 एस. सी. टी. 1002,197 एल. एड. 2डी 354 (2017)।
- 25 14 दिसंबर, 1900 को ब्रुसेल्स में, 2 जून, 1911 को वाशिंगटन में, 6 नवंबर, 1925 को द हेग में, 2 जून, 1934 को लंदन में, 31 अक्टूबर, 1958 को लिस्बन में और 14 जुलाई, 1967 को स्टॉकहोम में औद्योगिक संपत्ति के संरक्षण के लिए 20 मार्च, 1883 का पेरिस कन्वेंशन संशोधित किया गया।
- 26 9 सितंबर, 1886 का साहित्यिक और कलात्मक कार्यों के संरक्षण के लिए बर्न सम्मेलन, 4 मई, 1896 को पेरिस में पूरा हुआ, 13 नवंबर, 1908 को बर्लिन में संशोधित किया गया, 20 मार्च, 1914 को बर्न में पूरा किया गया, 2 जून, 1928 को रोम में संशोधित किया गया, 26 जून, 1948 को ब्रुसेल्स में संशोधित किया गया और 14 जुलाई, 1967 को स्टॉकहोम में संशोधित किया गया (विकासशील देशों के संबंध में प्रोटोकॉल के साथ)।
- 27 ट्रिप्स, 1869 यू.एन.टी.एस 299 33 आई. एल. एम. 1197.